620

॥ श्री गौरांगविधुर्जयति ॥

श्री प्रिया शरण दास
वृन्दावन.

श्री

वाणी

श्रीवल्लभरसिकजी की

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द ।
हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द ॥
भज-निताई गौर राधे श्याम ।
जप-हरे कृष्ण हरे राम ॥

ज में मान्य गन्य परम रसिक बाबा श्रीगौरांगदासजी के कृपापात्र, बरसाना (कोसी) निवासी, लाला बनखण्डि के आत्मज, गौरनिष्ठ, लाला चतुर्भुज (हरिसम्बन्धिनाम चैतन्यदास प्रसिद्ध नाम चेतराम) जी के सम्पूर्ण आर्थिक सहाय से मुद्रिता

गौर पूर्णिमा
सं० २००५
प्रथमावृत्ति १०००
मूल्य ।=)

प्रकाशक
बाबा कृष्णदास
कुसुम सरोवर

सर्वाधिकार सुरक्षित है

श्रीवल्लभरसिकजी की परम्परा

श्रीमन्नारायण, श्रीब्रह्मा, श्री नारद, श्रीवेदव्यास, श्रीमध्वाचार्य्य, श्रीपद्मनाभ, श्रीनरहरि, श्रीमाधव, श्रीअक्षोभ, श्रीजयतीर्थ, श्रीज्ञानसिन्धु, श्रीमहानिधि, श्रीविद्यानिधि, श्रीराजेन्द्र, श्रीजयधर्म्म, श्रीब्रह्मण्य, श्रीपुरुषोत्तम, श्रीव्यासतीर्थ, श्रीलक्ष्मीपति, श्रीमाधवेन्द्र,

श्रीईश्वरपुरी

|

श्रीराधाकृष्ण मिलित विग्रह

श्रीकृष्ण चैतन्य

महाप्रभु

|

श्रीरघुनाथ भट्ट गोस्वामी

|

श्रीगदाधर भट्ट गोस्वामी

|

वल्लभरसिकजी (वाणीकार)   रसिकोत्तंस (प्रेमपत्तनकार)

❀ भूमिका ❀

प्रेम पुरुषोत्तम कलि पावनावतार भगवान् श्री गौरङ्गदेव जी के कृपा पात्र छः गौस्वामी प्रसिद्ध हैं जिन्होंने व्रज भूमि में आकर व्रज का पुनरोद्धार तथा भक्ति-रस का प्रसार किया। श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामीजी महाराज का इन छः गोस्वामी वृन्द में विशेष स्थान हैं। आप श्रीमद्‌भागवत के अद्वितीय सरस वक्ता थे। इनके कृपा पात्र शिष्य श्री गदाधर भट्टजी अपनी वाणी द्वारा व्रज में बड़े प्रसिद्ध हुए; आपकी भागवत कथा बड़ी आकर्षक तथा विमुग्धकारी होती थी। भक्तमाल में श्री नाभाजी ने आपके विषय में यथेष्ट परिचय दिया है। श्री भट्ट जी द्वारा प्रतिष्ठित श्रीमदनमोहनदेव जू का विग्रह अठखम्भा के पास (श्री राधावल्लभ जी के मंदिर के सामने) ~~अपादि~~ विराजमान हैं और उनके वंशजों द्वारा सेवित हैं।

इन भट्ट जी के दो पुत्र रत्न (१) रसिकोत्तंस, (२) तथा वल्लभरसिकजी हुए, समय पाकर अपने पिताजी द्वारा दीक्षित होकर भगवत सेवा परायण तथा रसिक समाज सेवी हुए। श्री रसिकोत्तंस जी ने प्रसिद्ध "प्रेम-पत्तन" ग्रन्थ की रचना की तथा श्री वल्लभ रसिक जी ने व्रज भाषा में अनेक प्रकार की पद रचना की। व्रज में इनके पद बड़े चाव से गाये जाते हैं श्री पूज्य भ्राता बाबा गौराङ्गदासजी के मुख से अनेक पद सुनने का अवसर हमें मिला, तत् पश्चात् श्री वल्लभ रसिकजी की वाणी खोज करने का हमने प्रयास किया। श्री पूंछरी (गोबर्द्धन) निवासी श्री बाबा सुदामादासजी से

जो पद-संग्रह हमें मिला है उसे वर्त्तमान-वाणी रूप से प्रकाश करने में समर्थ हुए हैं। श्रीगदाधर भट्टजी के वंशज श्री गोवर्द्धनभट्टजी (श्री छुट्टनलालजी) ने इस ग्रन्थ के लिपी संशोधन में बिशेष परिश्रम उठाया है।

इस बाणी में पद-संग्रह निम्नोक्त रीति से विभाजित हैं:—

हिन्डोला, पवित्रा, वर्ष गाँठ, साँझी, दशहरा, दिवाली, होली, बसन्त, वसन्त की होली, फूलडोल, चन्दन-यात्रा, रथ-यात्रा, रास की माँझ, गुलाब कुंज की माँझ, जल-क्रीड़ा की माँझ, वर्षा की माँझ, वर्षा के बंगला की माँझ, सदा की माँझ, महल की साँझी, सुरत उल्लास (विहार-वर्णन), नित्य गान के पद, बारह बाट, अठारह पेंड़। श्री वल्लभरसिकजी की रचना अनुप्रास तथा यमक के लिये विशेष प्रख्यात है, और यमक की चमक तो ब्रजभाषा में अनूठी है जो अन्यत्र देखने को नहीं मिली यद्यपि जन-साधारण इन पदों के शब्द-विन्यास पढ़कर, कठिनता वश, भाव को समुचित रूपेण ग्रहण न कर सकें तो भी भाषा-मर्मज्ञ रसिक पाठक-वृन्द इस संग्रहावली से रस बिशेष का आस्वादन अवश्य करेंगे। जिसमें इस प्रकार की बाणियाँ काल पाकर लुप्त न हो जावें हमें बरसाना (कोसी) निवासी श्रीमान् लाला चतुर्भुज जी (चेतरामजी) से इस ग्रन्थ के प्रकाशित करने में प्रोत्साहन तथा आर्थिक सहाय मिली है श्रीमन् महाप्रभु आपका मंगल करें—

भवदीय

कृष्णदास

कुसुम सरोवर निवासी

श्री राधामदनमोहनो जयति

अथ श्रीवल्लभरसिकजी कृत वाणी

राग मलार

ललित हिंडोरो ललिता रच्यो है। लखि लखि दोऊ हरषेरी।
दंपति बरण सुभाव सुरति पूरति मनो सानि सच्यो है ॥१॥
कृत आरंभ जंभ भेदिनि मणिखंभ कांति उमची है।
तिनमें लाल मणिन कुसुमनिसों कनक मणि वेलि गची है ॥२॥
राखी अंस मयार मेंड नाखी भाखी कबि थोरें।
मिलि निकरे कर लखि अनुमानौं बर पगसों पग जोरें ॥३॥
दोहुँदिश कलस मध्य कमला कृत कुच बदना कृति मानें।
द्वै द्वै अँग दरसात नहीं याते रति लंपट लपटाने ॥४॥
मणि रंग पट सम डोरी डोरी सुरति छुटे दरसात।
काम केलि गुंफित उहि डोरी लखि पुनि रस सरसात ॥५॥
आनि परी आड़े पटुली चटुली नहिं डोरी धारी।
छुटि अटके झूमक दुहु दिशि लटके पटुली रतनारी ॥६॥
मणिमय शुक कोकिल चातक धारे मयारिकरि बोलैं।
साँचे केकी हू संग राचे नाँचें करें कलोलैं ॥७॥
जोवन में झूलत तऊ जन में फैली छटा नवीनी।
वल्लभ रसिक मदन दीपन दुहु मिलि चढि झूलनि लीनी ॥८॥

मलार

झूलति अति फूलति बन रानी। नवल रसिक वर संग॥
झूलत घन फूलत वृंदावन बसन बनक मन मानी ॥१॥
प्यारी पिय के नेह्सों सनी। पहिरि सोसनी सारी॥
झलकत बंदनि सहित कंचुकी झमकत लगी किनारी ॥२॥
चिलकत लहँगा की धारी, पर सारी मिहींन दीसी।
प्रकटित मंजुल पिंजुल की ठोरनि द्वै इक ठौरीसी ॥३॥
ललित गुलाबी फेंटा सीस कलित शिर पेच सुकलंगी।
कसी उर बसी तल मुक्ता हल हालनि हालनि बलगी ॥४॥
सुवरण वरण इजार चुनावट बेलि बुनावट गति की।
गुल अनार नीमा सीमा में झलमल झलमल अति की ॥५॥
रंग भीनों झीनों रूमाल ओढो करि कटि कसि दीनों।
वल्लभ रसिक रसीली झूलनि झूलि झूलि रस लीनों ॥६॥

राग मलार

झुलवहिं सहचरि रंग रंगीली रंग रंगीले दोऊ झूलें हो।
दसन रंगीली बसन रंगीली दरसन रसनि रंगीली हो ॥१॥
नव जोवन के जोरनि मोर मरोरनि छबि अंगनि मैं।
नई बांधनू तन में लखि पिय लई बांधनू मन मैं ॥२॥
लहरें लेंहि लहरिया सारी रूप समुद्र के जोरें।
जाइ किनारे लगेजु तारे तिनहूँ को लै बोरें ॥३॥
हरी हरी चुन्नी पर बूँदें लाल चुनी सी सोहैं।
लाल चुनी पर हरी हरी बूंदे रूँदे मनकों मोहैं ॥४॥

लाल चुनी इह लालचनी के बाल चुनीनि सभालें।
रंगी जानि रंगीन लालपे रंगीन रंगन वाले ॥५॥
लाल हरे अतरोंटन की दुति लाल हरे मन को हैं।
लाल हरे मन जाय लगे तहाँ लाल हरे ह्वै जोहैं ॥६॥
मुलकट चोली बनी धनी के अतुल पुलक उपजावैं।
चुकीन टूक टूक करतें कंचुकि टुकी सु भावै ॥७॥
भाग भरी भामिनि अनुरागिनि राग मलारहि छावैं।
संभ्रम दामिनि जानि श्यामघन झूमि झूमि पर आवैं ॥८॥
एक मृदंग तरंग धरें एक वीण प्रवीन बजावै।
सुवरण रंजित चूरे एकनि तंवूरे परनि मिलावैं ॥९॥
झूलि झूलि झुलबहिं गहि सहचरि जोर मचावैं।
इक कहै छिन रहीरी धीरी वीरी पान खवावैं ॥१०॥
झुलबहि बीर वहूटी सी जु बधूटी भूषन बाजैं!
बल्लभ रसिक अलिन के अँग मनौं अनंग दुहाई गाजैं ॥११॥

राग मलार

झूलत खेलनि छैल छबीली।
नव नव रंग मचावत गोरी डोरी तजि अरबीली ॥१॥
नारिन के कर सुक सारिनु के पिंजर मंजल मंजुल लागैं।
छैल अंस पर ललित हरित शुक सोहै सूहे बागैं ॥२॥
झूलति बाल लाल मुनि पिंजर मंजु कंज कर लीये।
अलक लडी लड़ि लडी छैलना मनि कौं अति छबि दीयें ॥३॥

लाल करनि पकरी चकरी बजि जजि निकरी षरी सुहावैं।
बंधी निरंतर अंतत डोरनि छुटि फिरि हाथन आवैं ॥४॥
बाल करनितें छुटि छुटि बंगी चंगी बाजनि भावैं।
फिरि फिरि हाथन थिर कीं कीं फिरि को कीरति गावैं ॥५॥
ओचकरी चकरीजु वाजनि लालन सन्मुख आवैं।
पकरीं करीं न तऊ लाजनी तियलौं उतकौ धावैं ॥६॥
चतुर लट्टू लहँट्टूहि फिराइ गगन तें हाथ हिलावैं।
हाथ हिला बै बाल मगन ह्वै दै दै हाथ लडावैं ॥७॥
हाथ लडावत साथ डुलावत अलि झुलवहि अल वेली।
बल्लभ रसिक सखी जानति छैलन की गैल नबेली ॥८॥

मल्हार

आजु दोऊ झूलत रति रस सानैं।
ठाढे मचकें लचकि तरुनि के गहि फल फूलन आनें ॥१॥
सूहे पट पहरें द्वै पटुली बैठे सामल गोरी।
अलिनु रंगीली तिय पद अंगुली पिय डोरी सों जोरी ॥२॥
श्याम काम बस झूलि झूलि पग मूलनि झूलिनि बढाहीं।
कामिनि चरण तामरस छुटि अलि काम लूटि मचि जाहीं ॥३॥
जोवन मधि जोवन मद झूलए झूलनि फंदनि जाने।
वल्लभ रसिक सखी कै नैना एही झुलनि झुलानैं ॥४॥

मलार

घन आएरी मन भावन सावन दिन।
लाल बंगला में रंगी लाल बाल सुनि मलार सुर सुरति रंग छाए॥

नैन कमल अमलन रंजित कृत परयंक अंक अलसाए॥
बल्लभ रसिक नेह मेह सरसि सरसि बरसनि झर से लाए॥१॥

मल्हार

ललित कदंब हिडोरें झूलें।
रसिक कदंब शिरोमणि दंपति बन संपति लखि फूलें॥
सोहें सूहे बसन सुवनतन मणि गण भूषन राजैं।
जोबन चैंननि बढे हैं नैन चल चढ़े हैं मैन के छाजैं॥२॥
रंगी हिडोरे की डोरी गोरीं गहि उमहि झुलावहि।
भाव सहित पावस रितु गीतनि मीत अमी रस प्यावैं॥३॥
ह्वै आरुढ़ मसृण तृण भूपर बूढ प्रौढ छबि छाई।
पाबसरितु झूलनि मंगल में गिल में आनि बिछाई॥४॥
घन अंबर पर संबरारि पच्चिनु लच्छिनु रंग लाए।
मित्र स्याम घन हित तनु चित्र बिचित्र बितान तनाए॥५॥
अधर धरें मुरली धर मुरली मधि सुँहां सुर रागें।
धुर बादरलों जाइ लगैं सुर धुरवा छूटन लागे॥६॥
इन्द्र धनुष आवैं बनि वनि पुनि छिन छिन में दुरि जात।
षचरंग सारी धारी छबि लखि मन मन मनौं लजात॥७॥
नवलालित्यनि सों नवला नवलाल मलारहि गावैं।
घनदामिनि के भारें मोर नाचैं राचे सुर चावैं॥८॥
बैठे आय हिडोरे कोकिल कल कंठन कों बोलैं।
निज कुल संभ्रम बोलि बोलि सुर रहैं मधुरता तोलैं॥९॥

झूलनि रमकनि दामिनि दमकनि रिमि झिमि झमकनि घनमें।
झूलनि दांबनि झूलनि लाबनि मिलि झिलि मिल अंगनि मैं ॥१०॥
फूलनि लाल गुही सु जुही के पेंचनि मेचक बैंनी।
झूलत पाछें पाछें लगि आछें मन वंधी त्रिवेंनी ॥११॥
घन अंधियारी लैयारी कीनी पिय प्यारी सो जोर।
दामिनि उजियारी बिच बिच न्यारी सखियाँरी ओर ॥१२॥
मोर छलन सो फिरें मोंर फिर जोर छलनि को ठानें।
चंचल चंचरीक एक आकुल रंचन हठ क्यो माने ॥१३॥
गहत उर बसी बंद जरकसी कंचुकी उरज कसी।
सुपटु कसे उकसे दबि ऊपर छबि तब फबिनिसी ॥१४॥
नेह मेह सरसैं झरसे बरसे रस टूटे बंद।
भीजें बसन मन धरणि भरणि अंकुरित रोम आनन्द ॥१५॥
इह झूलनि झूलबनि मद छाकी थाकी मति कत चलई।
बल्लभ रसिक अली अब निस दिन झुलवति झूलति रहई ॥१६॥

अथ पबित्रा (टोड़ी)

आजु बिचित्र दोऊ धारी हैं खरी छबि पहरि पबित्रनकी माल हाल रंग। ललित हरित सित असित लाल पीत पटकी लटकी गल जुगल लाल पीत पट की धार निसंग॥ नव नव रसके रंगनि भरेंजु सने पिय तिय हिय सरबर की छलकी तरंग। वल्लभ रसिक सुधारत पेरत हारत कर लियहि दिखाई परवाई सकुच पट देत ढपे अनंग ॥१॥

राग टोडी

आजु मंगल द्यौस सलून्यौ पून्यौं दून्यौं नीकें मधु मंगल अलि बाँधत राखी। छलनि छबीले रंगीले लाल वाल कर मंजुल लाल के सम रेसम की धुरी चुरीन के आगे राखी॥ ओरनि नरगस केसे झोंरनि कीं भोरनि की मोंहनी कमल श्री सुक तनु रंग मुक्तन लगी लाषी। वल्लभ रसिक पियारी करगहि राखी लखि दुरि अंगुरीनु हथेरी हेरी मुसकि अधर कछु भाषी ॥१॥

अथ बरस गांठि बिभास राग

आजु नवल की बरस गांठि बलि ललिता ललित बधाई लाए।
सुबरन बरन जरकसीवसननि रसिक रसीले दोऊ सुबन बनाये॥
कोमल अमल बिछोननि भौंननि दोनितल तलकल रंगनिबिछाए
जगमगाति तकिया लगि बैठे सखिया दुहु दिशि चौर ढोराए॥
सुवरण गुणनि बुननि बूठनि असमान सिम्याने आनि तनाये।
साइबान परदा कसि बंदनि मुक्तन बंधन माल बंधाए॥३॥
लसी जरकसी बसनन सहचरी चहचर मैंन सेंन सरसाए।
बीन रंगीन मृदंग सुरंग तमूरन पूरन राग जमाए॥४॥
बैठक चित्र रची चित हरे कहें क्योंकै सुरचित्र लिखाये।
जित तित अमित बधाई छाई प्रति बिंबित तुम यो सखीन सिखाए:
चौबा अतर अरगजा अंबर बर अंबरनि सवनि के लाए।
पानदान ले पान दान करि मान दान मानस हुलसाये॥६॥

नव नव देस गुणन के वेष सुदेश बनाइ अलिन भरवाएं।
भांति भांति की नकल कलाँनि सकल अबलानि आनि रस छाए
अशिष नख आसकतिनु खेलों यों आशिष कहि द्विजनि छकाए
रीझे आसिष नख लखि मुद्रनि दक्षिण धन हाथन करिपाए ॥८॥
एकनि कर उचाइ जस बाणी ठानी बन रानीहि सुहाये।
आबत बर भाँबत बन भाट सुमणि हाटक बसननि पहराये॥
चिलकति तिलक इजार चुनी शिर ऊदे फेटा मनो चिपकाए।
नहिं बनिता नहिं पुरुष सुमुख सुख आए वनि बनितान नचाए॥
बनि वनि तानें लेत सहानें रंगनि यह पट अगन मचाए।
दामिनि सहचरि सुन्दर मुन्दर छलनि बसन धन घन बरसाए॥
अटपटि भांति लपेटी टेढी पाग भाग अस्तीन झुलाये॥
बाजत ढोलक ताल ख्याल संग गावनि झुक दाबनि उकसाए॥
नाचें सांचे प्रेम नेम तजि राचें बैन सुनेन सुनाए॥
रीझें देत उनीन महल में लेत ही लेत गुणी अल साए॥ १३॥
सवते आगे ह्वै दे दे आपुनु आगें दे दे सब लुटवाये।
भूषन बसन बाल बकसे निकसे हिय हाल लाल मुसकाए॥
मुसकत जुगल जुगल भुज मेंलि सहेलिनु झेलि लहे मन भाये।
बल्लभ रसिक बधाई नबीन महल रस लीन प्रबीन रिझाए॥

पंचम

कुंज महल में आजु सोहिलौ।
बरस गांठि गोरी की सब रस गांठि घुलीं बरसत हैं
स्याम घन रस धन की लागी मोहिलौ॥

कामिनि दामिनि रहसि बधाई गाई तान
मान अद्भुत यह रस रसिकनहींकों सोहिलौ ॥
बल्लभरसिक ज्यौं ज्यौं अब आनंद छायौ त्यां त्यौं भींजे
अंबर तन मन दंपति संपति लहि मन मोहिलौ ॥ १ ॥

सांझी रागगोरी

मेरी छैल छबीली लाडिली मेरो छैल छबीलौ लाल हो।
लियें छैल छबीलीं सहचरी खेले छेल छबीले ख्याल हो ॥ १ ॥
मेरी बानी बानी यों भई धन वन रानी रंग।
सांझी महल माँझी बनिज अलि मिलि पिय सांझी संग ॥
कह्यौ विसाखा सुख द्रुमशाखा मंजुल भाषा वैन।
आजु सुकुबांरी जु कुवांरी सांझी बारी परिवा ऐन ॥ ३ ॥
सजि सिंगार बैठी ही चौको चौंकी यौंकी प्रीति।
जो परिवारी तो परिबारी फुल बारी चलि नीति ॥ ४ ॥
भूषन छौनी मद गज गौनी धरि स्याम सलौनी नाम।
ललिता रस सलिता हित बलिता ल्याई पूरन काम ॥ ५ ॥
भोरी गोरी यों कह्यौ कौ धौरी तेरे संग।
मोतन निरखति हरषति परखति बरषि श्याम घन रंग ॥ ६ ॥
कहि ललिता यह सांझी चीतनि रीतिनि नीतिनि जोर ॥
गीतनि सों जीतनि जीतनि प्रीतिनि सों ल्याई इहि ओर ॥ ७ ॥
स्याम सलोंनी सखी लखी हरषी रखी अपने साथ।
कुंज बाग अनुराग भाग भरी चली हाथ धर हाथ ॥ ८ ॥

करै मोद विनोद कमोदिन सी निकसी संग अली अनेक।
हुलसीं हुलसीं लसी अतुल जुग बदन शशी रस एक ॥ ९ ॥
मन लेनी पिक बैनी की बैनी सुहेलो की रहि झूलि।
ऊँची गुही जुही के फूलनि सो जुही के फूलनिसों फूलि ॥१०॥
स्याम संग रेनी चढ़ी तनेनी बेनी मैनी की ढार।
छुटि है अपार सिंगार भार रस के नाहि टूटी धार ॥११॥
चोटी हेम रतन जोटी नितंब पर लोटी आँनि।
मानो भूपन लपटे लंपट भुजग्नी लटकि लटकि लपटाँनि ॥१२॥
देखी चोटी श्याम फोंदा संग लोटी झझोटी सी कांहुँक पाइ।
गोरी दई पीठि पाछें तऊ लेति है पीठिहि दीठि लगाइ ॥१३॥
बैना मैना छबि सैना लै लूटति रस ऐनानि।
पिय हीरा लै लै ही रानिजु भरि राख्यो हीराँनि ॥ १४ ॥
करन फूल करनन झूलत इहि तूलन भूपन जानि।
स्याम पननि मिस स्याम पननि सों वाम कान लगे आँनि ॥१५
रूप भूप पकरी सकरी जकरी निकरी इक जाति।
बँधी मुक्तनु की बँदी बन्दी बाननु की पाँति ॥ १६ ॥
झूमि झूमि रहै झूमक धूम करत कपोल पर आइ।
करन फूल बस्यो श्याम करन फूल करन फूल देत छाइ ॥१७॥
नैन लैन छबि पाइक नाइक साइक सम चल्यौ है उमंग।
ता छबि पाइक के पाइक की आँकैये झूमक मिस झमकी है जंग॥
सुरकजु ऊरकंहुँ धुरकंहुँ पैठि चतुरकँह जीत्यौ जाइ।
बैठी आड़ो दै तकिया छकिया तकि याहि पिया सरसाइ ॥१९॥

कबहू चोवाबेंदी बाल भाल जोबा जोवा कौ साम।
सोबा के बसहोब घर पोबा कौ वाकें धाम ॥२०॥
लाल लाल दल की बेंदी ललकी झल की दई बाल।
लिष्यौ विधाता भाल विसाल सुझलकत लाल रसाल ॥२१॥
हारे अनियारे विषहारे साँननि धारे बाँन।
बे अजान लैन ही जानत चपले दै जानत प्रान ॥२२॥
खंजन मीन प्रबीन लीन वन हीन लीन उपमान।
कुँबर कुरंग तुरंग दौर चख ओर चकोरनु आँन ॥२३॥
चख उपमा आसन कमलासन आसनु निजु तनु कीन।
विमल जु हृदय कमल कमलज को धूलि कमल मुख दीन॥२४॥
मदन सिंगारे चख मतवारे कजरारे कजरा दीन।
तारे मधि प्यारे को भारे कारे कीन ॥२५॥
जिनि अँखियाँ मै वषियाँ सौंदै राखयाँ अखियाँ की दौर।
तिन सखियाँ ये अँखियाँ लखियाँ अंखियाँ नहि और ॥२६॥
नैंननि राजति नव युवराज विराजत सैननि क्रांति।
ताने पलक वितान तरुनी अरुनी की वरुणी झालरि झुलिजाति
लहा लहांति सी जुटीं जुटीं भ्रकुटीं कुटिल लकुटीं कर फेरि।
नायक अनंग नचावत अंगना इक नाइक मति हेरि ॥२८॥
भौंहें चढीं गढी धों किहि विधि पढीं कुटिलता कोरि।
गरब अरव छवि बढीं कढीं मति बढ़ी गढीं लेहि तोरि ॥२६॥
शुक नासा खासा सुगंधि आसा अलि फिरें चहुँ कोद।
नासा हंसि बैठे नासा दासायित लहि आमोद ॥३०॥

दोर मनोरथ की पथ की सुथकी नथकी छवि जोहि।
दृष्टि परी रसके चसके ससके नसके चलि मोहि ॥३१॥
नथ मनमथ को रथ रसिकन की दृष्टि पथन चढ्यौ जाय।
यह अकथ कोतुक जु थक्यौ है दृष्टि पथ को लेत चढाय ॥३२॥
गोल जु गोल कपोल अमोल तमोल रंगनि झलकें।
लेत है मोल तोल विनु पल में लोल परनि पलकें ॥३३॥
दर्पन सम सुनि दर्पन पन गहि गई कपोलनि भूमि।
निपटु सुपटु दृष्टिनि पग रपटत चपटि रही तिहि भूमि ॥३४॥
लाल अधर लालन मन अधराहि अधर सुरंगि धरें।
हसनि में स्याम दसन दरसनि कैसे उज्वल रसनि भरे ॥३५॥
पिय चोंपनि चोंपनि सों निरखत चखसों पनि पन लीन।
खोंपनि खोंपनि करन कों मन्मथ मनकों पनि पण कीन ॥३६॥
तिल तिल में लखि तिल तिल सम किय वदन प्रयागहि पीय।
आइ तिलह्वै कपोल चढ्यौ सुचढ्यौ सुचिरस मढ्यौ सोवत जीय
आयौ सुख गहनें चहनें मन चिबुक ले सुचिरस मह नेकु बोरि।
गहनों सो लखि करि गहनौं लहनौं जु बिन्दु कियौ मौरि ॥३८॥
लटकी लटखट की अटकी मन कहौं घट की उपमान।
चक फेरनि सों फेरनि की खेलन की मदन चौगान ॥३६॥
श्याम सारी में मोतिन बारी हेम वरी कानन मांझ।
तासों जुरीं जु अलक मनों घन बिजुरीं अरुफुरी तारा घुरी साँझ॥
ककरेजी सारी में सुधर करेजी सोहैं हेम फूल।
जकरेजी जार सिगार रसिक अकरेजी मानत फूल ॥४१॥

उरजनि पर जुन परति लखी कंचुकि पर बंद सुदेश।
पक्षि किशोर बेह्वै उड़ेस पत्त गिरि परे विपत्त शिशु देश ॥४२॥
अतलस लहंगा हेमखत लसत लिखे मत लसत है प्रेम।
लषि-पिय मन घूमत घूमत यह क्यौं धौं घूमत गहि नेम ॥४३॥
एक ओरतें उलटि छोर शिर धर्‌यौ जोबन के जोर।
मिले अलक झलकनि सबादले हले वादले छोर ॥४४॥
कियो उद्योत स्याम पोतिनु की ज्योतिनु को वसि लाल।
माह सिंगार नर्दीन कंपतु तप तपतु जपतु मन लाल ॥४५॥
लरीं लरीं जु सतलरी को धरी ग्रीव छवि भरी तीय।
लियें सिंधारे भारे व्रत धारे प्यारे मिलि टूटनि जीय ॥४६॥
लखि चंपक बरनी के भली चंपकली निकली कहैं लाल।
भई तरुनी यह तरुनीनमें कौतिक चंपक तरुनी डाल ॥४७॥
जिहि जगमगाति मधि नायक कांति सुभांति उर बसी पांति।
सोहैं सो हमेल करि केलि अंस उर झेलि झुली झल कांति॥४८॥
सकल कला रस गुर उर बाला हाला रसाला दीन।
झुली है विहाला मुक्तनि माला लाला मन वाला कीन ॥४६॥
चोली गहे चख पै द्विवली त्रिबली रस अति वली मेंन।
लखि चोरी तहां ऐंन बनी निकसें न मेंन सैंन वैंन ॥५०॥
मोरनि लगीया अंगिया लगिया को पिया कोहिया भयो बोर।
धर्‌यौ मोरि मरोरि करोरी रसिक वर मोर मरोरत मोर॥५१॥
मुहरा कंचुकि मुहरा धरि जुहरावे बुधि वल मीन केत।
पिय मन सूबन टुहरावै मुहरा तन मुहरो जेहेत ॥५२॥

बैठ्यौ बांह माह गडि पैठ्यौ ताइत ऐठ्यौ श्याम स्वतंत्र।
तामे सुबरण चित्र मित्र चख चित्र समान करण के मंत्र ॥५३॥
बाजू में बाजूबँद रतन झवा झूलत मखतूल।
करे इँहि बाजूँको बाजूहि बंद सोभा जुँ चढेन डीठि मूल॥
श्याम पोत सुबरण पोति नु मिली को तिहिं उपमा होति।
रीझ लपटनि भुज लपटनि दंपति अंग ज्योति ॥ ५५॥
कर गुजरीं मकरध्वजरीं जरियाँ जु जरी मनो जानि।
मनी बेलि गची रति केल सुची ललची चख लाल की आनि॥
लाल मूगाह्वै बिध्यौ गुँगा काहू गायो न नवीन।
कर मोतिनु छर सित जोतिनु होतिनहूँ करत रंगीन ॥ ५७॥
रतन चौक मधि लालनों कछवि रतन सोक की भाँति।
हाथ लाल न कियो हाथ लालन की बँद्धी के लालन की काँति॥
महदी हाथ मिहँदी तिहिं दीये हाथ लाल करि चित्र।
तासों नेह लगाई जगाइ रंगनि सों रंगाइ नैन करे मित्र ॥५६॥
श्याम छलनिकी छवि बलयनि उछलनि पहुँची पहुँची जाय।
पिय अंगुली रँगुली सँग लीय पहुँचनि पकरनि के भाय ॥६०॥
रतन मुद्रिकनि मुद्रत किय नृप चद्र करन दान गान।
निज कर निकरनि सोंजु करन कों दिय सुबरण को दान ॥६१
मीना रंगीना आरसी नवीना सखी प्रवीना जाँन।
यह आगे द्वै ह्वै बदन मदन सदनहि बन बावति आँनि ॥६२॥
छिंगुनि ऊपर छल्ला नूपूर झूले भूपर मनौं छबि जात॥
गाँढी तार बँधी कौतिक द्वै गोल बोलत डोलतिन चुचाति॥

कटि अटके कटि अटके सफाने फामें नफा चख जाँनि ।।
राखे सँवारि करि बर नितंव अवरहू जंघननि आनि ।। ६४ ।।
सघन जघन सु मदन के सदन लखि रीझ पंचाई न जाइ ।
अतरोटेकी सँलोटे द्वै चख लोटे पाइन आई ।। ६५ ।।
रतन गुजरीं लखि छवि जोरा जो राख्यो ठोरानि ।
नृपरसिक महा उर बस्यो लस्यौ दरस्यौ लैछत्र मुक्तानि ।।६६।।
पाइनि पाइ जेब सों बजाय मुल्याइ लिये है जेब ।
तिनि मनरतनन की धन की धरन की पाइ जेब करि जेव ।।६७
जाली की चुटकी ह्वै गौर छवि छुटकी घुटकी नैन ।
मनों मित्र कमल दल अमल अंगुलिनु छाँनि अमल लग्यो दैन ।।
रागी अनबट भट छबि लागी जागी ज्ञान डरात ।
ये चढे अंगूठन गूठन परवत मनि कुटनि चढि जात ।। ६९ ।।
इहीं विधि बनि ठनि चली अली रंगरली भलीं छवि भीर ।
पुंजनि पुंजनि गुंजति अलि जित मंजुलि कुंज समीर ।। ७० ।।
भइ झनक झनक पुनि ठनक उपवन में बनक अपार ।
मोहद धुनि दोहद सोहद तजि फूल्यौ षट ऋतु सार ।। ७१ ।।
भई फूलनि फलनि दलनि पल्लवनि लतावनिता इक सार ।
बहु फूलनि लहि फूलीं फूलीं भूलीं भूलीं गहि डार ।। ७२ ।।
लता प्रताननि मध्य भुज लता गहत लता भ्रम भूलि ।
कसुम दलनि भ्रम अधर दलनि की होति दल मलनि फूलि ।।
अधर रस चखी स्याम सखी लखी बोली ठोली भाषि ।
करें तमासे मधुर सगाँसे बासे फूलनि चाखि ।। ७४ ।।

श्याम सलोनी भई अगोनी बौनी के सम तूलं।
लौनी अंस चढो नीके वीनौ नीकें घुर फूल ॥ ७५॥
तब रही पीडुरी करति मीडुरी कहीं नहीं डुंरी मूल।
बीनत एक चढ़ीहि चढ़ी पुनि चढ़ी दुहुनि कर फूल ॥ ७६॥
गुलतुर्रा की डाँडी बैना पै माडी छाँडी झुलाइ।
मद गज गौनी की गजगौनी अलि निज गौं लीनी बलाइ ॥७७॥
एकनि फूलनि सोंरी चोंरी रची गोरी पर ढोरी आँनि।
सोंधें डोरी डोरी भोंरी भोंरीनिमैं भइ महँरानि ॥७८॥
पटुका फूल सु पटुका हूँ लटकाए अंस दुहूँ ओर।
बद्धी की भाँतिनि लठके मटके सटके कटि छोर ॥७६॥
भरि भरि झालनि मालनि गुहि गुहि मालनि ल्याइ न थोर।
लै लै जनेउवा डारी बालनि प्यालिनि हालनि जोर ॥८०॥
चलीं खेलि फूल ले लटकति मटकति अटकति सांझी रंग।
नवल लालसी अवला लसी नवला सी फेरी संग ॥८१॥
गोरी गोरी गाँवहि चौंरी ढुरावंहि आवँहि साथ।
कोइ सिंगार हारकीं गेंद खिलार नु छारंहि मारहिं हाथ ॥८२॥
कोइलसीं नरगिसके कूजनि कोई लसी कुंजि उमंग।
धरें संसित सित अवतंस रसिक अवतंस अंस धरि अंग ॥८३॥
इहि विधि अलबेली वेली सी खेली अलि अलि रंग।
आई महल माँझ साँझी कों चहल पहल लिये संग ॥८४॥
एकनि पन्ना की भीतिनि पै गुलाव रस भिन्ना छन्ना फेरि।
मृगमद गारे सोंले सुधारे चंदा तारे हेरि ॥८५॥

जे करत उज्यारे हरत अंध्यारे सब शिर धारे जानि।
ते तिय सन्मुख लागे कारे विधु तारे धारे मानि ॥८६॥
पीत फूल सनके चीतति रंग चीतति मीत सहेलि।
तरें कोई लै कोई लै फूल भरें भरें कोई लखि चाखि झेलि ॥८७॥
चीतति नीकें लाल वनी कें फीके लागत फूल।
तव ढ़ापति नीकें अंगुरी के गोरी के अधरनि मूल ॥८८॥
हँसि हँसि परत अघर परसत दरसत सित कुसुसन आँहि।
तव कहैं होति हैं वरजनिचीतनिगरजनिवरजनिअलिवलिजाँहि
तब कर उचाइ बरचाइ वरचाइ धाइ चौकी चढि चीतति आइ।
अलि उर चौंकी उकसत गौंकी कर चौकी देत विठाइ ॥९०॥
रंजित चलित ललित कर पल्लव निहरत पल्लवनि लाइ।
बचे वीच मैं संचे रचे गचे सुवरण पत्र मँगाइ ॥९१॥
यों चीते पच रंगे अंगनि में जगमगे रंग मगे लगे विधु विंव।
मनो भूषन भूषित निरदूषन वहु मुख भूषन प्रतिविंव ॥९२॥
फेरि करैयनि चीते तरैयनि लेहि वलैयनि आलि।
छला छन्न धुनि जोति अमी तनु जीतनि जीतनि हालि ॥९३॥
दूजी अली मिलि चीतन पूजी पूजी सब की आस।
गीतनि गावहि मीत मल्हावहि प्रीति वढ़ावहि हास ॥९४॥
स्याम सखी कर करषी हरषी सखी मंगली आइ।
सेवी कों सुखदेबी देबी की मूरति धरी मध्य बनाइ ॥९५॥
षोडश विधिसों नव निधि रिधि सों सिधि सो पानि पुजाइ।
भोग धरे वाको मेवा सेवा फल कहि मुसक्याइ ॥९६॥

करत आरती लिये थारती जै जै भारती संग।
दीप दीप की दीपति रीझी दीपनि मिसु बारति अंग ॥९७॥
सबन सीस नवायो गोरी पे कहायौ मंत्र सुहायो एह।
नमो देवि जय देहि देहि मम श्याम सनेह अछेह ॥९८॥
तव श्याम सखी मन उमह्यौ प्रेम गयो ज्ञान रह्यो नहि देह।
देवि जय देहि देहि मम गोरी नेह अछेह ॥९९॥
तब चौंकि परी चितई हित वचन नचन में रचन पण जोर।
विहसि परीं रस भरीं खरी सिगरीं लखि नवल किशोर॥१००॥
कोऊ दीपही ल्याई ढिग वर आई हुलसाँई सुकुवारि।
बदन निहारें उरज उघारें हारें हारें वारें रिझ वारि ॥१०१॥
तब अलि काहूँ चलि काहूँ मिसु पलि काहूँ लिये वैठाई।
पाग जरकसी कसो लसी सिर कल कलंगीहि जुलाई ॥१०२॥
नीमा छवि सीमा ग्रीवा धरि ग्रीवा धार्यो पीय।
सुवरणबटी पर चख टूटीं लुटीं छुटी नही तीय ॥१०३॥
सो हैं शिर जूरे कर चूरे मोती चूरे मोदक पानि।
बाँटहि मोदनिसों चहूँ कोदनि गोदनि भरि मेवानि ॥१०४॥
धरे रतन थार में आनि आन पकबान थान अलि आनि।
सोहें आनन हीं सों लगेहि लगेहि खवावनि पानि ॥१०५॥
तहाँ लीन अली अली निजु लीन है बीणमें मीनकेत की बात।
पान खात लपटात गात उर जात परस सरसात ॥१०६॥
आसव झोकनि आसन रोकनि हंसि अवलोकनि मोद।
कोक कलानिके ओक दुहुनिके को कहि सकै विनोद ॥१०७॥

लषि साँवल गोर अमंद चंद रति द्वन्द सुछन्द विहार।
वढे रस सागर परनि पढे मन कढे चढेन क ार ॥१०८॥
इहि रस मनगसि जुगल महल वसि निकसिन वनहुँ लखांई।
वल्लभ रसिकते महल माँभी साँभी माँभी छकि जाँहि ॥१०६॥

अब दसहरा राग विलावल

आज प्यारी जू कुंज विहारी संग नव छवि छ्दारी सु कहत वनेना। कसी जरकसी पग दुहुनि मंगलि अलि कृत यव अंकुर उरसनि लसी रसीले पलक परेना। पिय मन तिय तन धरी जु लै छवि भुले शिर चढी काहूँ रानेना। वल्लभरसिक सुधारत जौकौतिलक भलक उरसों उर गसि तिय भौंह कसी संभरति हँसी नैना ॥१॥

दिवारी रागहमीर

बैठे दोऊ सन्मुख मुख सुखमा लखि सखि तकियाँ लगे। जगमग जगमग कुंज महल दिश दिश दीपावली भलमल भलमल भूषनवसन नव लाल अमल चख लखत खगे ॥१॥ तीन ग्राम साधहिं सुर बाँधहि गाँवहि मधुर मृदंग वजावहि रंग बढ़ावहि संग पगे। सुहृद अलीं रंग रलीं दीप द्रुम भांति दिखावहि पान खबावहि हँसहि हंसावहि रीभि रिभावहि उर उमगे ॥२॥ सुवरण वनी सुजनी मधि चोपर चटकीली सारी रतनारी भासे पासे कर रँगनि रंगे। डारे दाऊ भले हूलाल चल विचल चाल चलि पेठें वाल धरतिय हुलसहि सुनि हरि विहारिणी रूप ठगे ॥३॥ प्यारी की सारीसों भूलि जुग बाँधि

फूलि कहे सोहत जोहत रचि मचि योंपि हिय हिलगे। बाजी चुंबित राजी सों लाई हारे पियारे पै लेत हूँ दोष लजात मुसकि जात बल्लभ रसिक कृत सुकृत जगे ॥४॥

यमन-राग

ये मन में वारी दीप उज्यारी चित्तर सारी लखि मैन चैन मिलि रैनि दिबारी। घृत परयंक अंक मधि धनन कों दूँ मिलि षेलनि चतुर खिलारी ॥ धरें मूठि मधि धन तन को पिया लाई दाँउ सर्वस लियो प्यारी। वल्लभ रसिक जुआ जित बनि बनि हँसि हँसि देत सु कौतुक भारी ॥ १ ॥

अथ बंसत

भयो भर जोवन को बन सोंभा निहारि लता लह लहनि नेति नेति न गनत अलि लंपट दरसावत पिय मुसकित भोंरी त्यौरी डारि ॥ १ ॥ केसरि भीनी झीनी ओढ़नी को अंचल चंचल अलबेली सकति न सँभारि। सोंधे सनी बनी चोली ते छनी छटा लखि रीझि बाल पर लाल रह्यौ अपनपौ हारि ॥२॥ कनकलता सों लपटि तरुनि लालन ललचाए भरत निसंक रंक अँकवारि। मदन राग हिंडोल झुलावत वल्लभरसिक सहचरी गावति प्रेम बिवस जानि लेत सुरत रंग सँवारि ॥ ३ ॥ ऋतु बंसत में लंसत सूरति दोऊ बैठे निकसि निकुंज बाग। ललित गुंज मंजुल लतान पर अलिपुंजनि की सुनि सुनि गुनि गुनि पुनि पुनि रस कौ चढत पाग ॥ १ ॥ वौरे आँवनि चढ़ि चढ़ि वौरे जुग जुग द्वै कुहुकत कोकिल कुल रीझत सुनि कल रव

धिभाग। प्रफुलित गुल लालाकी क्यारीं पवन लगति महकति लहकारी पियप्यारी चख लगनि लाग ॥ २ ॥ रंग रंग रतन सतन के कूजे जतननि गुल नरगससों गसि गसि ताखन विच राखन असलाग। नवल लाल नव बाल परस्पर फूलि फूलि फूलनि के झोंरा राखे पेचनि विच अलाग ॥ ३ ॥ लालन कर नरगस की डाँड़ी अति इतराय धरत तिय उर पर अथ मनमथ उरहोति जाग। बाला गुल लाला की बैंदी कर उचाइ धरि लाल भाल पर यों करत रंग दोऊ रस तड़ाग ॥ ४ ॥ ललिता ललित रंग रंग भीने लखि लखि रीझी भीजी तान वजायौ है बंसत राग। रति रस झेलीं सबै सहेली नवरंग भीनें झीनें बागें रागें सुगल जुगल सुहाग ॥ ५ ॥ एकनि करनि बिच रंग रंग सीसी रतन पिया ले लिपें शशीसीं हुलसीं अलि आनन्द याग। दशन अरुणाई वसन अरुणाई दशन बसन अरुणाई नई लखि पोहि लई प्रिय प्रेम धाग ॥ ६ ॥ अलि संकुलित लता हलि हलि नेनि नेति कहति सीरहति सी थकि थकि सिखवति दिखवति अनंगराग। आनंद चिक दै दै अलबेलि के अधर कुसुम को अनुपम लंपट मधुप मीत मुसिकनि पराग ॥ ७ ॥ सोंधे सनी बनी चोली तें छनि छनि छवि की छटा छवीली छुवत छैल छलक्योऽनुराग। छलकि छलकि छलि छलि रति पति की छकनि छके लखि छिपि छिपि छिन छिन बल्लभरसिक सखि चखस भाग ॥ ८ ॥

अथ होली धमारि राग सारंग

होरी खेलत है नव बाल छैल छबीले सों आजु।
बैस किशोरी गोरी गोरी चंपेकीसी माल ॥ १॥
सारीं केसरिसों रंगी घूमत लहँगा लाल।
चोबा बेंदी कंचुकी दिये चोबा बेंदी भाल ॥ २॥
ऊँची करि बेंणीं कसीं तनि उकसी भोंह सुभाइ।
मद छाकीं अँखियाँ लसे बिहसें रस के चाइ ॥ ३॥
लटकत बाजू बंद तर फोंदा अति अभिराम।
निकसे भुज भूलनि कसे चोली मुहरा श्याम ॥ ४॥
हरीं चुरीं तर लटपटी मुक्ता दाम।
करले निकसें गरबसें नरगस डाँडी बाम ॥ ५॥
रतन चौक प्यारी करनि प्रतिबिंबित जु किशोर।
हात बीच प्रीतम सुन्यो सु झलकत इतकीं ओर ॥ ६॥
लाल पनिन सोंजे भरे उभरे डाँक लगाइ।
करनफूल भूलत रहे कांनन ही में आइ ॥ ७॥
नथ के मुक्तन हूँ रंगे देखि लाल सोहाल।
नथके बँधे बसन मनहि रंगत रंगीलो लाल ॥ ८॥
झीनी आँगीं अग्र कुच झाँईं यह मति देत।
हियकी अंखिया तीयकी पिय की छिपि छवि लेत ॥ ९॥
तार बँधे बेंना सँधे शिर पर राखे बाल।
मुक्तनहूँकें होतु है अंगनि परसत हाल ॥ १०॥

घूँघट में वाजी करत निकरत बाजी नैंन ।
शिर पर कलंगी सीहलें भलैं भोंह की सैन ॥ ११ ॥
श्याम पोतिकी ज्योति तर कंठ माल की ढार ।
चंपकली के तरह लैं बर हमेल और हार ॥ १२ ॥
लसी उरबसी तीय उर धुर कुरसी पर जाय ।
तऊ घर वसी पीय उर धसी जीय ललचाइ ॥ १३ ॥
रुकि रुकि रही जु नवल तिय धुकि धुकि पटके माँहि ।
लुकि लुकि देखें लाल को भुकि भुकि झटके बाँह ॥ १४ ॥
झमके झूमक सारियाँ दमकें दीपति अंग ।
खमकें खपैनि अंगियाँ रमकें रंगी अंनग ॥ १५ ॥
मटकें मोर मरोर सों लटकें बैंनी चारु ।
पटकें अंतर झलमलें टटके फूलन हारु ॥ १६ ॥
वनक कनक सी पागकी मनकु गसी चिकनाइ ।
तनक पेच के देत तमें मन कुपेंच पर जाइ ॥ १७ ॥
लटकत तुर्रा पाग पर मनसिज कुर्रा भाइ ।
मान चोर फुर्राइ के जुर्रालों उडि जाइ ॥ १८ ॥
निज सूरति की उर बसी पिय शिर चढ़ी दिखाति ।
त्यों त्यों तिय इत शिर चढ़ी सुराति द्योंस इतराति ॥ १९ ॥
सिर किनहूँ तियकें संची खिरकिनि पगिया सेत ।
छिरकि छवीलौ छकि रह्यो थिरकि थिरकि सुख लेत ॥ २० ॥
कटि मन भावन पै रही जटि मन भावन फेर ।
दाबन लागी ही रहे घेरी दाँवन घेर ॥ २१ ॥

भूलत एक ही छोरसों करत कलोल अमंद ।
लाला बाला बंदसों कीनी बाला-बंद ॥ २२ ॥
नैंकनि हारें जों मुसकि मारें डारैं तीय ।
पिय इजार तिन तीयनिके लेत इजारें जीय ॥ २३ ॥
मुक्तन हू कों देखिरी बँधे लाल के संग ।
चलि चलि कानन तें करैं आनन ही में रंग ॥ २४ ॥
फूल भरी दुलरी करी कंठ धरी है लाल ।
तोऊ सरकि सरकी फरकि मिलहि माल जिम बाल ॥ २५ ॥
सघन जघन खन कुचन तन पिचकन सचि रंग रात ।
परसत दरसत अँगनि के तरसत रस सरसात ॥ २६ ॥
तिय पिय चखि लखि पिचक लै छोड़ैं धार अछेह ।
सीखी संग घन स्याम के रंग को बरसत मेह ॥ २७ ॥
गहि गहि लाल गुलाल कों करसों छोड़ैं बाल ।
रस भींजे लपटे भये कर बिच लाल गुलाल ॥ २८ ॥
लै लै मुठी गुलाल की दै दै अंचल ओट ।
कै कै चंचल चखन कों द्वै द्वै करहीं चोट ॥ २९ ॥
झपटति लाल गुलाल कों रपटत पिय की ओर ।
कपट तिया के हीय में लपटति भजति लजोर ॥ ३० ॥
डफरी तिन पर आँगुरी सर सफरीसी जोर ।
बिफरी गारी गाँवहीं सफरी सीं चख ढोर ॥ ३१ ॥
गावन चाव न सों लगे डफहि बजावन लाल ।
भावन सों भीजी फिरें दावन लागी बाल ॥ ३२ ॥

सुर मारग के बीच हीं थिरकि अधर कर संग।
बजि बजि में रंगे रंगे चंगे मुह मुह चंग ॥ ३३ ॥
खंजरी टनपनी लीयें सुघर खंजरी आजु।
खंजरीति मन कीं करत मंजुरीति कें बाजु ॥ ३४ ॥
भीनी अलक फुलेल सों छुटी कपोलनि आइ।
लगि लगि आंचर सों फिरी दियो कुमाच चढ़ाय ॥ ३५ ॥
भाइ भरी परि लाजनी दवि दुरि निकसी जाइ।
पाइल पाँइन बाजनी सुलालहि लेति बुलाइ ॥ ३६ ॥
चोली चुपरि फुलेल सों झोली झेलि गुलाल।
तोली तानन गाँवहीं होलीहीके ख्याल ॥३७॥
आंनन पानन सों रचे कानन राचे नैन।
सैनन सौं वातैं रचें रचें मचैं उम चैन ॥३८॥
रागें रागनि जोरलें बाजे बाजें जोर।
बातें कहीं सुनी परें आनन आनन जोर ॥३६॥
तारनि मैंताननि करें तिय गल पिय कल बीन।
दुहँनि मीत आँकों भरें करें सुरन आधीन ॥४०॥
धरें तंबूरा कंध सुर भरें उचाए नारि।
चूरा जूरा सों जुरे दुहुँ सुर जुरे जवारि ॥४१॥
सुरति रंगकों अंकले मुंह मूदे तैं जोर।
परसत करत मृदंग यह नवल तीया लों सोर ॥४२॥
नवला सींम सनेहकी नवला सी लै आइ।
नवल कपोल कलोल सों छलसों जाहि छुबाइ ॥४३॥

ठाढे सकुच गहें कहें क्यों हू न नागर नेति।
कर उचाइ अति चाइ सों नागरि अंजन देति ॥४४॥
डीठि लगै डीठ्यो लगै लगै मूंठि लगि मूठि।
वेंदी आड़ दियें लगै संग डीठि अर मूठि ॥४५॥
सतर उरज पिय अतर सों करसों वलि मलि दीन।
नतरकु अंजन देत तिय सतर भोंह कत कीन ॥४६॥
अरगजा इहू लजाइ तिय यद्यपि अंजन दीन।
पिय चोली लगि अरगजा रस भिजाय हिय लीन ॥४७॥
रंग धार पिचकें चलें मूठिन चलें गुलाल।
चोबा कें चुरवा चलें चलें अतर रूमाल ॥४८॥
रतन पिचक मुंदरी भरें मूंठि माझ न लखाय।
औचक छोड़ें लाडिली चौंकि चतुर मुसिक्याय ॥४९॥
उपरेनी डारी उलटि पिय मन लैनी जोर।
लटकें लटके ढिग भलें हलें बादले छोर ॥५०॥
उलटि अंगूठा आरसी लखि मुख पोंछनि माँहि।
प्रतिविवित लालहिं लखें ओंठ ऐंठि इठलाँहि ॥५१॥
हंसै हँसावें गाँवहि हैं सब रस की एन।
कायव्यूह कीयें दियें मन बैठ्यौ मैंन ॥५२॥
जोरी धन सों गाँठि लै छोरी तन मन गाँठि।
होरी होरी कहत हैं बोरी आँनद गाँठि ॥५३॥
छूटि छूटि अंचल गए टूटि टूटि गए हार।
लूटि लूटि छबि पिय छके घूँटि घूँटि रस सार ॥५४॥

दरकि दरकि चोली तनी तरकि तरकि गई टूटि।
सरकि सरकि तनमन मिले ढरकि ढरकि रस लूटि ॥५५॥
मन पटु का मन करि गह्यो फगुवा कहै वनैन।
मन दीयें मन ही लियें भये दुहुनि मन चैन ॥५६॥
पिय मन दीयें हीं रहो तिय हिय जिय आनन्द।
तिय मन लीयें ही रहो पिय हिय जिय आनन्द ॥ ५७ ॥
दोहा सम दोहा सवै नहि पुनरुक्ति हि जानि।
हैं न्यारे बल्लभ रसिक रसना मिलि रसखाँनि ॥ ५८ ॥
होरी खेल कहैन क्यों दुहुन मैंन सुख देंन।
बल्लभ रसिक सखीनि के रोम रोम में बैंन ॥ ५९ ॥

पंचम

होरी गोरी सों खेलै ये छवीलो छैल योवन उमंग।
रागनि अनुरागनिसों भीजे रंग।
भीनी तानन पुनि भिजवति लगति है लाल गुलाल संग।
नैन रंगीले बैंन रंगीले रंगे मैंन के ऐन रंग ॥
वल्लभ रसिक सखी कुंज बिहारी प्यारी के दशन बसन रंग।
लीये किये हैं रंगीले अंग अंग ॥ १ ॥

राग धनाश्री

श्री नबल बधू रंग भीनी प्रीतम संग खेलें।
झूमि झूमि रस तानन गावैंरि झई छैल नबेलें ॥ १ ॥
रंगीलो लाल पिचकनि रंग भरि भरि उरजनि ऊपर मेलें ॥१॥

मुरि मुरि वदन दुरावनि मैंमन भावन को रस झेलैं ॥ २॥
मटकति धरति चरन धरनी पर लेटकत हार हमेलैं ॥
मटकति धरति चरन धर नीपर लटवत हार हमेलैं ।
प्रफुलित नव बेलीसी लह लहें झेलीं अलि अलबेलैं ॥ ३॥
अंचल मधि चंचल चख अंचल मैंन सेंन कों पेलैं ।
बल्लभ रसिक पिय घमड़ि गुलाल मैं नवघन अंक सकेलैं ॥ ४॥

होरी कोडोल राग सारंग

झूलत दोऊ रंग भीने अति ललित ललिता डोलरच्यो है । थंभनि गसि आँबनि के मौरेनि बीच बीच फूलनि के झौंरनि डोरनि फूलीं बेलि लपेटीं तहाँ मधुर तर भौंरनि सोर सच्यो है। डोरी छोडि छोडि अति लंपट उर पट डोरी छोडत लंपट तरनि रस नहीं बच्यो है । वल्लभरसिक लाल गोरी कों होरी डोल झुलाँवहिं सहचरि फूलडोल झूलति है आपुन अद्भुत रंग मच्यो है ॥ १ ॥

राग हमीर

झूलत दंपति अति रति रंग भीने मंजुल डोल बन्यो है।
फूलनि के झोंरा झूलत अलि तान बितान तन्यो है।
बल्लभ रसिक सहचरी झुलवति पिय धनि धनि जन्म गन्यों है॥

फूलडोल रागहमीर

फूलडोल झूलत है पिय प्यारी ।
चहू दिस फैलीहै फूल फूल गुलाब रचित बंगला मधि फूलि फूलि बैठे रूप अनूप उज्यारी ॥ १ ॥ झूलत हार हमेल केलिरस

झूलति लट सटकारी। झूलत दाँवनि झमकि झूमसों झूलत झूमक सारी ॥ २ ॥ फूलनि झूलनि झूलि झुलावें गाँवहि झूमक नारी। फूलि झूलि नागरि गुन आगरि झुलवति ताननि न्यारी ॥ ३ ॥ झूली फूली नव नव रंगनि सुकुवारी फुलवारी। झूमि झूमि कर फल गहि फूलनि चाखत मधुप विहारी ॥ ४ ॥ फूल्यो बन झूलीं बन बेलीं फूल झूल विस्तारी। फूलो वल्लभ रसिक सखीं चौंरी ढारत फूल सँवारी ॥ ५ ॥

अथ चंदन यात्रा राग हमीर

चंदन चोली लगीं हैं दुहुन तन रंगी हैं परस्पर रीझि रीझि करि। फव्यो है रँगीलो फेंटा शिर पर रँग्यौ है रंगीली वाम अरगजा लग्यो अभिराम बाम भागनि ढरि ॥ १ ॥ बैठे भवन उसीर सीस सींचे गुलाब सोई नीर परत उर पर बिंदुनि झरि। झलकत उरज अग्र तिय हिय के ऐन सैन नैना पलकनि विन पिय छवि लेत निकरि लाजनि दरि ॥ २ ॥ सरकत दांवनि लाबनि मिलवत तिय उरकर धरि लेत बूँदनि मुसकति अतिनागरि। आनंद कंद बदन चंदन पर चंदन बिंदु चढाय आइ बरलेत है अधर अमृत रस भरि भरि। शीत लगति शीतल समीर लगि लगति मीत उर जगति रुमाबलि तऊ ढुरावति व्यजन सखी सुघरि। वल्लभ रसिक सखी सारंग गावति दंपति मनमथ रसनि भिगावति माल गुलाब दलनि की पावत हिय पहरावति आपु रीझ बचन ऊचरि ॥ ४ ॥

अथ रथ यात्रा राग देवगंधार

ललिता रथ एक ललित बनायो।
बने निकुंज बागकों बागे आगें आनि रखायो ॥ १॥
देखि मनोरथ बन्यों अली को भाँति भलीनि सच्यो है।
उघर्यो सुबरन चित्रित चित्र धर्यो बहु सुघर पच्यो है॥ २॥
कोमल सुरंग दुरंगे तकिया झलक झुवा सुवरन के।
सुथरी सुथरी ऊपर सुथरे तकिया भरे परन के ॥ ३॥
फिर चहुँदिश बैठक कैं फिरि भरि झुलि झालरि मुक्तन की।
हरित खोल करिपर असोल बिनु झोल तोल शुक तनु की ॥४॥
राखी कर सुनि कर गहि बाग जुगल जब बाग निकलहीं।
चारु दारु मय हयके तनु चेतन ह्वै ह्वै तब चलहीं॥ ५॥
सुनें अकथ रथ गुण मनि पैठे चढि बैठे आकरषे।
बाग गहीं जबहीं तबहीं चलि निकसे घोरे हरषे॥ ६॥
दुहूँ ओर चढ़ि चली अली द्वै करें मोर छल ठाढी।
लगि लगि बैठे तकिया सों जगमग जगमग दुति बाढी॥ ७॥
घोरनु के शिर पर कलंगी बलंगी चौरासी बाजैं।
द्दाबन लगे जीनके भूलि झुलाबन फोंदा राजें ॥ ८॥
जतननि रतन जड़े पट्टे दुमचिनमैं रुचि उमची है।
सुवरण सूतनि नख मखतूलीं भूलीं वाग रची हैं॥ ९॥
बाजिनु की डोरी छोरी पिय गहीं सुमुठि उठायो।
धरत धरनि पर पाय नही अरवनि को गरब गवायो॥ १०॥
लालन के बकसे बसनन को रसनन को कसि आवें।

करे बाम इत माम छरी गहि कोटिक काम गिरावै ॥ ११ ॥
कुंज बाग के शीतल मधुर फलनि अलि आँगे राषे ।
तब लगि कनकलता फूलनि मधु भूल मधुह पिय चाखैं ॥१२॥
पासें अलबेली झेली सखी वाग तमासें खेलें ।
प्रफुलित जुगल रसायन धन लहि गहि धन पाइन पेलैं ॥ १३ ॥
रथ परजंक अंग सुरतन की दुहूँ मिलि खेलनि लीनी ।
बल्लभ रसिक जुबाहि जीति धन जित बन चित बनि दीनी ॥

राग देव गंधार

बैठे रथ पर दंपति भावत, वन पथ संपत देखत ।
करि सिंगार सिंगार भवनतें उप वन बेठक आवत ॥ १ ॥
जितरथ के सुवरण चित्र विचित्र विचित्र तियाहि दिखावत ।
रंग सुरंग तुरंगनु की बागे गहि उमहि चलावत ॥ २ ॥
चौरासी बाजनि कलंगी राजनि लखि नैन दुरावत ।
सबै विमान विमान किये उपमा नहि कैसेहुँ पावत ॥ ३ ॥
कोमल सुरंग दुरंग तकिया लगि जगि अनंग इतरावत ।
बल्लभरसिक रीझि उरझनि में मो नैननि उरझावत ॥ ४ ॥

राग देव गंधार ॥

रथ चढि आवनि आजु नई ।
अलिन मनोरथ पथ में लालनसों लड़वाइ आइ प्यारी हय बागलई ॥
एकही ओर दुहुँ चरनन की झुलवनि मैं झुलई ।
बल्लभरसिक छरी फेरनि हंसि हेरनि मति मुलई ॥ १ ॥

❀ इति वर्षोत्सव पद समाप्त ❀

रास की माँझ

पूरण शशि मंडल की किरने मणि मंडल परआई।
चमकि चमकि चहुँदिश दिशि पुलिननि बन चाँदनी बिछाई॥
अंबर पर सुंदर तारागण छाति छपाइ तनाई।
बल्लभरसिक विलास रास उल्लास गाँस सुधि आई॥ १॥

नव नागर नट चटक मटक सों मोर मुकुट छबि धारी।
धारी छवि चटकीलें दुपटा लटकत छोर छटारी॥
किये प्रकाश रास मंडल पर तास काछिनी न्यारी।
बल्लभ रसिक करली मुरली सुर लिये तीय मन हारी॥ २॥

प्यारी पहरि बादली सारी चहुँदिस लाइ किनारी।
जाली की चौली पर बंद जरी केही की हारी॥
अटकनि लटकनि लालन की लखि हरखि अंस भुज धारी।
लटकि चली मंडल पर बल्लभ रसिक अली बलिहारी॥ ३॥

झमकि चली सँग बाल हाल करतालनि लें लें गोरीं।
लाई गति मृदंग उपजाई झांई बन घन घोरी॥
थेई थेई तत्तत्थेई थेई येई धुनि लै जोरी।
वल्लभ रसिक विहारी प्यारीं प्यारीं तान झकोरी॥ ४॥

तान झकोरनि माननि तोरति आंननि जोररि ठाँनि।
हस्तक भेद कनक कंकन की बनक ठनक मन मानी॥
झनक झनक नूपुर ऊपर पाइल की वजनि मिलानी।
बल्लभ रसिक लटक बेणी की जीकी अति सुख दानी॥ ५॥

भृकुटी नचन नचन बचननि की कटि की लचनि बनी है।
तिय तन मोर मुकट की लटकनि मटकति मैन सनी है॥
अंचल पटमें चंचल निपट बनीके नैन अनी है।
बल्लभ रसिक बनी अवनी पर वृंदावन अबनी है॥ ६॥

दिवारी की माझ

जोपरि चौपरि खेलत हैं तूं यों परि खेलि बिचारी।
सारी मतिहि जुगल मिलि देहन देहि जदी मति सारी॥
अठारह छकरी तीन कानन मिले तोले चलि तीन्यों इक ठौंरी।
वल्लभ रसिक जुवा जीत्यो जगि जाति है रैन दिवारी॥ १॥
धरें चोक परें कोऊ नौक परें तीन्यों कें परे बुधि सारी।
जुग आसरे करें विनु निकरें दाउ परे पर मारी॥
हम जुग वल पकरीं छक छकरीं चलि सत पंजरीं न विचारी।
हम जुवा जीति जुवा घर आए वल्लभ रसिक जुवारी॥ २॥

होरी

लोंनी मुरतिषु भीति लोंनी चोली होली गाँवै।
चोवा अतर अरगजा अंबर मजा अजायव ल्यावैं॥
सौंधे कील लपटें आवै लपटत अंखिन सों आवैं।
वल्लभ रसिक गुलाल उड़ावत धीरज लाज उड़ावैं॥ १॥
तनसुख को रूमाल अतरसों तरकरि निपट भिगावैं।
चित हिलगाइ चतुर कों ननिसों चोवा चतुर चढावैं॥
करि करि घंरी दुहूँ कर पर धरि अदब लिये ढिंग आवैं।
बल्लभ रसिक लेत करतें तिय करतें धीरज जावैं॥ २॥

हियहि लगाबैं नैननि लाबैं तिय कों निपट सुहाबै।
पिम देखें जन्म सुफल करि लेखैं फूलें अंग नमाबैं॥
अधर कपोल पोंछ चोली में राखें धरि ज्यों भाबैं।
बल्लभ रसिक लाल फिरि माँगें सैंननि हाहा खाबै॥३॥
अरजनि करे अजब तरजनि सों बरजनि कामन आबै।
उरजन तन देखें उरझन सों चतुर अली लखि जाबैं।
और बनैं न कछू तब और रूमाल बनाए ल्याबैं।
बल्लभ रसिक लेंइ नहि छोड़े हिलग्यो यही कहाबैं॥४॥
बाह बाह करि नैननि लाबै सैंननि यों बतराबैं।
तो तन परसि रूमाल मरगज्यो मेरे जियहि जिबाबैं॥
नबरंगी चंगी लगि हिलगनि गनि गनि नाँउ धराबैं।
बल्लभरसिक सखी याकी सी प्रीति कहाँ कोऊ पाबैं॥५॥
बल्लभ रसिक भरे रस रंगनि लाल गुलाल उड़ाबैं।
बन बेली फल फूल तरुनि लें लाले रंग सचाबैं॥
अलबेली के तन मन बसननि रंग अनंग रचाबैं।
श्री वृंदावन अनुराग रूप यह होरी प्रकट दिखाबैं॥६॥

गुलाब कुंज की मांझ

मैंबारी फूल गुलाब कुंज मंजुल मैं फूले हैं पिय प्यारी।
फूली है चंद चादिनी तामधि फूली फूल तिवारी॥
फूलनि के तकिया लगि सोंहैं छकियाँ सखि लखि यारी।
बल्लभ रसिक वदन चंदन तें छबि की छुटहि छटारी॥

फूलनि पिछवारीं ढारीं आलिनु जालिन विच बारी।
फूलनि के छज्जे तर झोंरा भोंरा गुंजनि न्यारी॥
फूलनि साईबान तने कल सानि फूल शिर धारी।
वल्लभरसिक फूले निशि कुहकत कल कोकिल सुक सारी॥२॥
चमकिहि चंद अमंद किरण सों पुलिन चांदनी सारी।
छपैं वितान तने अंवर पर तारापति तारारी॥
फूली किरन ऋतु पति अति फूल्यौ त्रिविध पवन सुखकारी।
वल्लभ रसिक सरोवर मान अमानति फूल निकारी॥३॥
फूल शवीह फवीनी माँ गल जुगल डोरिया धारी।
फूली भाँवनि चोली दाँवनि फूल कसी दी सारी॥
फूलनि के गहनें मन गहने फूलनि जगि पगियारी।
बल्लभरसिक अतर अबंर तर लपट फूल चहुँ घाँरी॥४॥
फूल गुलाल आवसी आग्ली लिये दल गुलाव मालारी।
फूली कर करपूर दानि लै लै कुलाव सीसीरी॥
चोंरनि ढारहिं भौरनि टारहिं प्रेम भोंर में डारी।
वल्लभ रसिक चाँदिनी सहचरि सूरति साँचे ढारीं॥५॥
अली मृदंग वजावँहि गावँहि तानैं भाइ उतारी।
फूलीं चहू दिश कुंज कनातैं यातैं धुनि उच्चारी॥
आली के नृत्यहि निहारि निज हारहि देत उतारी।
वल्लभरसिक मुसकियारहि उर हारहि करत निहारी॥६॥
फूलीं रस सींबाँ प्यारी निज भुज प्रिय ग्रीवा धारी।
फूली पिय भुज तिय भुज तरु ह्वै लहि जुग धन कलसारी॥

रंग हिंडोरे की डोरी गहि झूलि फूलि अनुरागैं।
वल्लभ रसिक मचकि लचकनि रस लीने श्याम सभागैं ॥ ४॥

वर्षा के बंगला पर की मांझ

दंपति महल अटाँ ठाढ़े बाढे घन घटा सुहाईं।
बन्यो बंगला रंग लाल मणि जाल छटा छबि छाईं॥
सोहें सोहे बसन सुहाने तानें आलिनु गाईं।
बल्लभ रसिक सुहेकी सूरति मनों मूरति धरि आईं ॥ १॥
रंग सोसनी प्यारी सारी झूलनि झूलति आवैं।
घूमति अखियाँ मद छाँकीं वाँकीं चकरीनि फिरावैं॥
लाल परी चकरी गोरी की डोरी सों उर झावैं।
बल्लभ रसिक उरझि सुरझनि हूँ फिर उरझाइ रिझावैं ॥ २॥
नीमालाम चुरी चढ़ाय कर मुक्तामाल झुलावैं।
फेटा लाल हरी हरी सिरकी फिरकी काढि फिरावैं॥
सुंदर मुदरी छलनि छली सुंदरि निज हाथ हिलावैं।
बल्लभ रसिक रंगीले हाथनि दै दै हाथ लड़ावैं ॥ ३॥
सहचरि नबल बधूटी बीर बहूटी लै लै आवैं।
लेत लाल कर देत बालकें लाल लाल मन भावैं॥
दुपटा झटकि घटा में आईं तिय बगपांति दिखावैं।
बल्लभ रसिक वृन्दावन सावन श्याम घनहिं सरसावैं ॥ ४॥

अथ सदां की मांझ

जिनके देह नेह परि पूरण तें जगमगात जग माँहीं।
जिन दरसें जिन परसें चिकनें रोम रोम ह्वै जाँहीं॥

नरपसु दाग लगन उर जिन की बातें सुनत डराहीं।
वल्लभ रसिक निसंक अंक भरि भरि तिन सों लपटाँहीं ॥ १ ॥
पंथ असाड़े कोई पैर न रक्खो असी लखि लखूबो लोग हंसाए।
नेह नगर दे अंदर नू असी शिरदे पैर चलाए ॥
मथ्थे विंदी हथ्थो मिहदी अखूखी कज्जल पाए।
छके छबीली छैल सैल पर वल्लभ रसिक कहाए ॥ २ ॥
आह पवेननि वाहकी सीदा असीं तिस्सी राहाँ चल्लाँ।
इष्क दिलाँदे नाले नाले मह ववाँ दी गल्लाँ ॥
स्याह जुलफ छल्ले जिस छल्ले असी थर सल्ले तिसी महल्लाँ।
वल्लभ रसिक रूमाल लाल पर झूमि हमेसैं झल्लाँ ॥ ३ ॥
इक तीरथ के तीरथ के पुहुचन के हेखें भेपैं।
पाउन को पाउन को दरसन तरसन मरत परेपैं ॥
नैननि नैननि सों मिलैं हम दंपति संपति देखैं।
वल्लभ रसिक मगज गज ऊपर चढ़े रहैं सो लेपैं ॥ ४ ॥
जुगल रूप मद नैन पियाले भरि भरि फिरि फिरि पीयैं।
छकनि छके उछके क्यों सोहैं भौंहैं अमल चढ़ीयैं ॥
कुंजविहारी प्यारे के हम मगज गजक सों जीयैं।
वल्लभरसिक फिरैं मत वाले मुसिकनि फूलनि लीयैं ॥५॥
हम तो जुगल रूपरस माते नातें ही के मानें।
देहीं नातें नेक न मानें ह्याँते हैं अलसानें।
स्याम सनेही हिये सुहाते नातें तिन सों ठानैं।
वल्लभरसिक फिरें इतरातें चितराते उमदानैं ॥६॥

इष्क शहर अंदर नू असी मुष्किल पंथ चलाए।
जाहर नर नारी होइ खड़े ओहै भेस बनाए।
सुहृद अली चंबेली वेली एहे नाँउ धराए।
रंग महल दी अहल टहल बिच बल्लभ रसिक कहाए॥ ७॥
इष्क दिलांदे नाले असाडी दिल अंदर द्यांँ गल्ला।
ओरों सें अदरदा परदा उप्पर हल्ली भल्लाँ॥
लख्योबिच्चव कोइ कर सस्जे और सब नुखखे ढोवनि पल्लाँ।
सभ्भे रज्जे सभ्भे सज्जे सखूखी इक बल्लभ रसिक महल्लाँ॥
महवूबाँ दे शहर विच्च सोई आइ तमासा जावैं।
दीन कुफर बद बोइन आवैं ऐसा दिल जद धोवैं॥
मार न तीरावे झकरनदी महर हमेशां लोवैं।
बल्लभ रसिक सिहर पढ़ डाले तद हम शहरी होवैं॥ ६॥
हमतो इष्क इष्क सें कीया जुम्ले हुवे दरसाहीं।
नरदरषत विच इष्के सुज्झा बिगर इष्क कुछ नाहीं॥
मुझ तन प्रान जान हुवा इष्के इष्क हुवा पर छाँहीं।
वल्लभरसिक नाल यह लग्गा अब हम धौंक्या आँहीं॥१०॥
वेशक हुवा शिकस्ती होवे तदि कछू फते निहारै।
रसका भिस्ती हुवा रहे तौ दरद गरद निर वारै।
किस्ती चश्म लगाए रखखैं तो तू शह कों ले तारैं।
प्रीति न षिस्ती होवे जो वल्लभरसिक मजे जस हारैं॥११॥
जैसे लीरष्षे तिन ही कों ऊवट पंथ निकारें।
आड़ बंद बाँधेंजे तिनहीं घायल करि करि डारें।

जे किश्ती हि लगावें तिनकों बेगि बोरि ही मारें।
वल्लभरसिक महबूब, आशिक पर मिहर नजर जब ढारैं॥१२॥
सेली लयें चले आसाले आड बँद नहिं षोलैं।
बेसर करण फूल की बातें फिरि फिरि गढि गढि छोलैं।
दंपति संपति ही सों राते यातै करें कलोलें।
वल्लभरसिक नेही गेही सम जोबन माते डोलैं॥१३॥
इत नैनों माँध मोहन सोहन सूरति आनि अमानी।
धरम शरम पथ अब सब भूलें भूले नेम कहानी।
वल्लभरसिक कोई कुछ भाषौ मैं नेकु न मन में आनी।
हिय अटकी लटको चटकीली पाग जु सुरंग सहानी॥१४॥
इक टक मो तन नैन लगावैं गावैं तान लगोंहीं।
हँसौं नहीं तौ मोहि हँसावैं कहि कहि बात हँसों हीं।
लोनी मूरति मेरो मन ललचावै मान करों सो योंहीं।
वल्लभरसिक हिये हठि लावैं हों जु लगों सु लगोहीं॥१५॥
लष्षी सोंधें भिन्नी अलकें अष्षी पलक विसाडीं।
जुट्टी जुट्टीं भौंहनि सों हनि लुट्टीं मत्ति असाडीं।
रोम रोम तुझ प्रेम जोम सें मैं नेंम कोंम सब छाडीं।
हाल निहाल शाल संग लीयें वल्लभ रसिक नु साडीं॥१६॥
नव किशोर वर मोर मुकट की लटकनि मों लटकावैं।
कुंडल हलन चलनि नैनन की मटकनि मों मटकावैं॥
ले रूमाल लंपट मधुपन की हटकनि मों हटकावैं।
वल्लभ रसिक सखी याकी यह अटकनि मों अटकावैं॥१७॥

चितवनि चलनि हसनि बानें तन ले महबूब जो आया।
धीरज धरम सरम समुझनि की दर बर गोल भगाया॥
भरि भर वासा किये अकेला इश्क लिये ठहराया।
बल्लभ रसिक इन इश्क दुजागी यागी मन पकराया॥१८॥
वनक वनी कमनीय पाग तनु ■ गनि गुननि वढाई।
पेचनि फबी सु वल्लभ रसिक ले तिय सम शिरहि चढाई॥
फेरनि फिरि पगिया लगिया सों बैठी ठीक दिखाई।
नैन लगायति गोस पेच पै चेलि लीक बहु पाई॥१६॥
लोनों सांबल नागर सागर वर मुरली धुनि गरजें।
वल्लभ रसिक तान लहर्यौं आवति गावति सुर पुरजें॥
मोर पंख कर डुलें डुलें कँलगी पुतरी लों बरजें।
अरे ह्याँ रूप कहर दरयाउ आउ जिनि नाउ धरम की लरजें॥
झूठे जन झूठ ही सों राचे साँचे नहिं पहिचानें।
झूंठे जन सों साँच बखानैं तो उलटे रूठन ठानें॥
रूठ्यो दई किये विषयी का कहियें झूठ निषानें।
वल्लभ रसिक हंस विन पय रस विबेचन को करि जानें॥२१॥
यह जग धरम शरम को दौरत दोरत पाय पिरानें।
झूंठी बातें रसना तातें रस नातें अलसानें॥
दई दई पशु संगति वश नहि भजि कित जाँहि सयाने।
बल्लभ रसिक इकोसें बसि अनुभवसों हिये सिरानें॥२२॥
हम जुगल महल रस लिंदा कुंज अलिंदा उँलघि न जानें।
रस दारिंदा वृन्दावन गण चरितन हूँ गहि छानें।

वन के वासिंदा सब निंदा करें सुको मन आने।
वल्लभ रसिक चुनिंदा विनु को निंदा सुख पहचानें ॥२३॥
जिनि दावनि हम महली हूबे तिनि दावनि जे नहीं जानें।
पाइंदा जन अंदर पहुँचे निंदा करे खिश्यानें ॥
कुंज महल बासिदां हम इनदां अहिसानें मानें।
वल्लभ रसिक चुनिंदा हूवे वजि निंदा सुहदानें ॥२४॥
रंग जाफराँ फेंटा शिर पर साफ कियें थिरकावैं।
नाफरमा तुर्रा फरमावै लरजत रज लटकावैं ॥
जोबन की मस्ती नेंनों धिर फिर अस्तीन चढ़ावैं।
वल्लम रसिक कर नरगिस डाँडी फेरे हेर्यो भावैं ॥२५॥
नीमें परना फरमा बूँटा फेंटा चिकन करावैं।
गुल्लाले की वेंदी शिर पर कर मिहदी रंग रचावैं ॥
चुरीदार महली इजार की धार विचार बहावैं।
वल्लभ रसिक रूमाल फेर विच परैं सु फेरि न आवैं ॥२६॥

अथ दोहा

सवै सतनु नहिं अतनु जन अतनु आइ फिरि जाइ।
जननु शतनु बल्लभ रसिक तनुहि बतन किय आइ ॥ १ ॥
अवलालों तनुके लगे अव लालों मन आइ।
तव लालो कर में वसें सव लालों भजि जाइ ॥ २ ॥
परमारथ नू तहिं लग्यो वचन जु सुफल कहाइ।
बल्लभ रसिक सु प्रीति कें पाले परें मिठाइ ॥ ३ ॥

सतनु रहें सकतो अतनु पर तनु घस ते आइ।
अतनु भयो अव सतनु के परत परत घसि जाइ॥ ४॥
हेरि जाति चख फेर में फेंरि गई करि जाति।
पिय मन जीते जाति पै तिय मन जीते जाति॥ ५॥
मुरि उर अंचल षोलि लखि चली ओढि मुसिक्यात।
जीतें जाति गई तऊ गई न जीतें जाति॥ ६॥
मद छकि अनिमिष लखत चष प्रतिविंव्यो पिय चारु।
अवलक श्याम तुरंग पर चढ्यो षमकि सिंगारु॥ ७॥
तू मेरे नैननि वसी कहै चतुर चखलाइ।
मद छांकी इक टक निरषि मानति अति सति भाइ॥ ८॥
नैननि में तूहीं बसै दोऊ कहै लुभ्याइ।
मद माते इक टक निरषि मानत अति सति भाइ॥ ९॥
रस सागर नागर जुगल छवि तरंग कें मांहि।
उतराते वल्लभ रसिक जन मन डूबे जाहि॥१०॥
मीडि उतारें उवटनों घनों ऊजरो लोइ।
नाइनि नाइनि भेद कों जानि चकित सीहोइ॥११॥
तव उतारे उवटनों जव अति उज्जल होइ।
नाइन नाइन भेद कँहँ कहत रहत रस भोइ॥१२॥
मारतु बैठि उरज बुरज गोलनि गोलनि मैंन।
हाथनि हाथनि तोरि वँद किय पिय हाथनि ऐंन॥१३॥
निपट अटपटी रीति ये लगनि अगिनि की आँहि।
दूरि भएँ हींयें जरैं लपटनि हियें शिराँहि॥१४॥

कौंन प्रीति पिय हिय लग्यो जुर जनि तन मन वारि।
सोले तहस नहस कियो उरजनि गुरजनि मारि ॥१५॥
ज्यौं ज्यौं तहस नहस करै उरजनि गुरजनि मारि।
समर समर बानेंत पिय मानें नेकु न हारि ॥१६॥
सहतूतन नूतनु तनुनि कछू कछूक मिठाँनि।
नूतन नूतन मधुरई सहुतू तनु ही जानि ॥१७॥
सुलगें ईंधन सों बरहि लपटनि बसन निबारि।
भावति ज्यावति शीत हरि लगनि अगनि अनुहारि ॥१८॥
सपने हूँ छोडैं नहीं गदरानेंहि निहारि।
रसै लेत यह आव लौं अपने पालैं पारि ॥१९॥
तिय तन वैनी चढ़तहीं धीरज गांऊ वहाँहि।
डूबत बल्लभ रसिक मन नीरस जन उतराँहि ॥२०॥
तिय तन बैनी चढ़ि चढी मैंन तरंग झकोर।
नैंन तरंगन कों गहैं त्यौं त्यौं डूबें जोर ॥२१॥
चौवा वेंदी देत में उकसत उकसी आहि।
चोवा बेंदी कंचुकी लेति जिय मो आहि ॥२२॥
नेहेसों नाते बिना पेंडे ही डरि जाँहि।
जेही उतराते रहैं तेही इत इत रांहि ॥२३॥
उज्जल रसनि वढी चढी सीस ईस कें हाल।
पावन परसें हीं करैं सुरति रंगिणी बाल ॥२४॥
नाक चढैं भौंहै चढे चढे नैन मन गैंन।
मूड चढाई तीय तब येऊ नेंकु रुकैंन ॥२५॥

सुथरी चुरी इजार की तिलक चिलक कें जोर।
सुरषें बुरषें बीच ह्वै ऐंचत चित निज ओर ॥२६॥
मैना सुकुच उकसी शिर दए बंद स्त्र तोरि।
चौकी बैठें लूट लिय शत पथ गथ झक झोरि ॥२७॥
लावै पल पट विनु विकल तारे तारे जोर।
बल्लभ रसिक रूप धन परै न अंतर चोर ॥२८॥
कोतिक पल पट लावतें आवतु है कितु ओर।
पलक हूँ पट लावै नहीं आवै न अंतर चोर ॥२६॥
नरजा धन विनु जाति कहूँ नरजा तोली जाति।
बल्लभ रसिक नर जाति यह अर जाँनहीं बिकाति ॥३०॥
नरजाँ तौली जांति ये नरजा तोली जाति।
नरजाँ तोली जाँतियें नरजा तोली जाँति ॥३१॥
लछिमी सदन वदन मदन जुलफ कुलफ दिय जाँनि।
अंवर ह्वै छानी लखति बल्लभ रसिकहि आँनि ॥३२॥
जातिन चितवनि जाति है तातन चितबनि जाति।
बातन ही लगि जाति जिहँ बात नहीं लगि जाति ॥३३॥
बात नहीं लगि जाति जिहिं बात नहीं लगि जाति।
बात नहीं लगि जाति जिहँ बात नहीं लगि जाति ॥३४॥
जाति नवोटनि मैं तऊ या की औरै जाति।
ओटनि ओटनि मैं सुपटु मन मनु ओटें जाति ॥३५॥
जो सुर जन उरजन बसन दिय दुरि गुरु जन पार।
पुर जनि पुरजनि उन कियो परव उरजनि वास ॥३६॥

सुर जनु अरु गुरुजननिकों निपट हीं पास निबास ।
पुरजन पुरजननि होत मन जुर जन सुनत उसास ॥३७॥
सब पट षोलि अन्हाहुँ सखि आँखि लषिहै को गात ।
लपस्यो पट वल्लभ रसिक मनजु न षोल्यो जात ॥३८॥
उघरें तन तन सुख लषन सखि चख जब लगि जात ।
पेठि प्रथम हीं पीय मन बैंठन लौं लगि जात ॥३९॥
सुरजन हास हुलास हिय पुरजन गुरजन पास ।
पुरजनि पुरजनि वासमें उरजनि पर को बास ॥४०॥
तारी लगि वल्लभ रसिक षुलतहैं ताले बंद ।
षोलत तारी लाइकैं तारी तालें बंद ॥४१॥
तारी लाँबँहि ये षुलें षुलें न तालें बंद ।
षोलत तारी लाइ कैं तालें तालें बंद ॥४२॥
कुटिल रहैं गुरुता जहाँ सूधें लघुता होय ।
छंद ग्रंथ सम जगत लखि मदन मनहि समोय ॥४३॥
मोहन भोंहन दोय गुण कहि अहि चख उपमान ।
येई चढ़े कमान सम कढे बेघको बान ॥४४॥
परि चोकनि नोंकनि लखैं मारें ज्यों ज्यों तीय ।
अरि चोकनि नोंकनिं रखें सारें त्यों त्यों पीय ॥४५॥
परै अटारहि सुनि अरे दाउ न देहि सुथान ।
अरे तीनि कानन परें जीतें जुवा सुजान ॥४६॥
बल्लभ रसिकनिकी रहनि मुख सूं कहत बनेंन ।
सुख सों छाए महल वसि भीजत तन मन वैन ॥४७॥

वीर पीर नैननि वढी पलकैं अंतर लाल ।
पीतंवर रगरें लगें ह्वै है नीके हाल ॥४८॥
तिनकों बल्लभ रसिक वसि जगमें औषधि हैन ।
जिनके पीतर गुननि पर परसत ढरकत नैन ॥४९॥
पठयो मीत जु सीत हर तूँलहि लपट्यो बास ।
तूँलहि लपट्यो उर कँपै काँपे रुकिहै हास ॥५०॥
बल्लभ रसिक अलिनि हिय जानि मैन के ऐंन ।
दिनमणि युत वर कर मिलैं हिले क्यों व पथि लैन ॥५१॥
भामिनि भरमहिं भानु किन भानुमती मति दीन ।
युग संपुट तर हरि मनों गुटकनि फेरनि लीन ॥५२॥
राह जतायो नांचहों वल्लभ रसिक अमंद ।
देखि सतायो आपु कों राहु वतायो चंद ॥५३॥
नाइन कों कौतिक भयो नाइन कों रंग दोइ ।
पाइन कों लावै रंगनि पाइन का रँग लेइ ॥५४॥
कुरतीहू उरतू वनें क्योन मौज सरसाइ ।
कुरतीहू उरतू बनै मौज दार दरसाइ ॥५५॥
कुरती उरतू वनि उकसि उरतूं वनि दरसाइ ।
तू अति बल्लभ रसिक मति तूलहि तूँ वति जाइ ॥५६॥
ना इन कों कहि पाइ क्यों ना इन के रंगे लाल ।
नाइन कों नाइन रँगे नाइन कों रँगे लाल ॥५७॥
तिया चौके परें न क्यों पासे कर गहे वाल ।
तीया चौक परे न क्यों पासे कर गेहा लाल ॥५८॥

तिया चौक आवै न तौ वनै जुवा को ख्याल ।
तिया चौक न आवै न क्यौं षेल जुवा कें लाल ॥५९॥
उर तुव पिय कुरती लसी सुनि डर तूँवनि लाइ ।
मानिनि उरतू वनि परी उर तुव वनि परी आइ ॥६०॥
उरतीकें कुरती लसी उरतू रस परि आइ ।
उरतू वनि पेरत तऊ उरतू बुडवत जाइ ॥६१॥
निकसी विनु कंचुकि सकुचि उर धरि अंचल न्हाइ।
ओढ्यो हो छन में वसन भोछन श्याम मिलाइ ॥६२॥
वलमाँ है नहीं नेकहूँ वलमाँसों करै मानु ।
पलमाहै अकुलाइ फिरि पलमारहै न जानु ॥६३॥
दृगनि अंगोछनि मीत तन दृग मोछनि मुसिक्याइ ।
हो छन में ओढति अनहि भोछनि लाल मिलाइ ॥६४॥
पल मोहो नही लाल कें पलमाँहै नही देत ।
पलमाँहे तउ डरति यह पल माँहै धरि लैत ॥६५॥
बदन प्रिया गहि लहि कियो तिल तिल दिल निज पीय ।
मनों तिलह्वै सुचि रस भिग्यो लग्यो लेंन अव जीब ॥६६॥
अति अनीति सखी लषि तन कुत-वन मान सरसाइ ।
तूँ अन खाएँ हीं रसिक बल्लभ हाहा खाई ॥६७॥
अटकें विटकें हूँ कहूँ सुमिरत धामन राम ।
अष्टयाम बल्लभ रसिक अटके बिटके काम ॥६७॥

कवित्त

पानन सो आनन रचे हैं नैन कानन सों रूप रस पानन सों नेंक

न अघात हैं। आनन सों आन एक मेक है आन रहै मन की सिहान पंच सर सरसात हैं। वल्लभरसिक रीझि आनन मिलालन में हानन के वैन ऐन मैन दरसात हैं। भृकुटी कमानन कटा-छन के बानन चढे सो नेह सान जु निसान वेधि जात हैं ॥१॥ चली उठि पलिकातें आलि काहूँ भाँति भली लटकि लटकि पिय पर अलि सानिकी। लाइ लाइ वदन मदन उपजाइ लेति ज्याइ लेति जियहि मुरनि मुरझानि की। जोरि जोरि भुज मोरि मोरि तन आँगि रानि उकसत कुच कलसानि दरसानि-की। वल्लभरसिक को बिकानहीं कीं बानि परी जानि परी बानि तोहि मृदु मुसक्यान की ॥२॥ अटकि परी है पग मटकि धरनि पाइ पाइल की ठनक सुठौन अनवट की। झीन पट छीन कटि मदन कटक लखि सटकि चली सकुचि गली ह्वै निकट की। वल्लभरसिक लखि वदन चटक में उलट वट पार युग धार मरवट को। हट को निपट तऊ नटि की ललनि मति लटकी लपेट में लपटि आइ लटकी ॥३॥ मुकुट की लटक में नैनन की मटक में पीतपट चटक में सटकि ढरतु हैं। कुंडल की डोलन में अमल कपोलन में मंजु मिठ वोलन में होलनि करतु है। मुरली की वाजनि में सुरनि की भाजनि मैं सुख के समाजनि मैं लाजनि दरतु है। वल्लभरसिक लखि अटक उतरि कटि अटक्यों जु मन घट हट क्यों परतु है ॥४॥ नैननि में वैन देन लेन वस नैननि में नैननि में हिलन मिलन सरसानि की। भौंहनि में हंसनि लसनि पुनि भौंहनि में मैन

की वसनि सुँ वसनि चित आंनिकी। जोवन के जोरनि में मोर की मरोरनि में कहुँन करोरनि में गति अलसानिकी। वल्लभरसिक कों विकान हीकी वान परी प्यारी तेरे अंगनि कों वानि इतरानकी ॥५॥

सवैया

पाइल पाइल गाइलए ललचे पिय लोंइन आइ ढरेई। लचि लावनि लावनि लाइ चढाइ लए रस पाइके भाइ भरेई॥ वल्लभ रसिक वस्सि भये त्रिवली कसि कंचुकि दावि धरेई। छिपे छवि लेत लपैं जुलफाँ कुलफों विच वंद करे सु करेई॥६॥

क०–उरज उतंग अति भरित भरे से अंग अधर सुरंग सों रँगी सी मति जाति हैं। ऊंची गुही वैणी सों तनेनी भोंह भाइ भरी आइ भरी छवि हँसि लसि इतराति हैं॥ वल्लभ रसिक दोऊ सनमुख सुख सने चकित थकित कित दृयोस कितराति हैं। नैंननि सिहानि ललचानि मुसक्यानि तरसानि सरसानि आनि आनि दरसाति हैं॥७॥ नैननि में नैन कहूँ नैननिही वेधि लेत सैननि समेत ह्वै करैं न सुधियारी की। केसरि की आड जिय आह आड तोरति है वेसरम करने की वेसरत यारी की। अटकाइ अटकाइ अधर हीं लटकाइ रांषति है मन यह बानि लटकारी की। वल्लभ रसिक मुसिकनि बाँधि लेति तऊ जीवनि जियारी है जू प्यारी ही विहारी की॥८॥ भूषन कों भूषन धरति जब भूषन कूं भूषन हरति श्याम छलनि समेत हैं। पाइजेब इन हीं ते पाइ जेव रही पाइ जैव रही ते वकहीं

छोड़त निकेत हैं ॥ महा उर कौंहूँ कों येई महा उर रंग करें बल्लभ रसिक रंग मिसु कर लेत हैं। कोइ शिर पाइ यह रोपै तिय तेरे पाइ सब शिर पाइन के शिर पाइ देत हैं ॥९॥ कंदुक से अंगति अनंग उर रंग करें रंग करें अंगनि में कंदुक के ख्याल कों। लटकत बदन पैं लटकत उठावत लटकत छोरन उढावत है शाल कों ॥ वल्लभ रसिक लाल जुवा तन हेरे फिरि हेरे हाल हेरनि के हालसों निहाल कों। वसुधा की वसुधा सुधामें रूप वाल को सुवसुधा मगहि असु धाम गह्यो लाल को ॥१०॥ राजति गयंद चाल वाजत किंकिणि जाल भ्राजत हैं बिंदु लाल इंदु सम भाल को ॥ लोचन विशाल करैं कानन सों ख्याल लाल अधर रसाल मनों पल्लव रसाल को ॥ लाल दशन सिवार वार सार बार कहा राजत जंगाल रंग कंचुकि के जाल कों। मरे जान विधि हूँ बनायो हाल वल्लभ रसिक लाल पुण्य जाल ही सों रूप वाल को ॥११॥ अवति है वालनि के संग गज चाल कछू गावति है ख्याल सु मधुर तान ताल कों। कटि लचकनि हाल कुटिल अलक हाल देखत संभाल भयो दौरनौं दिवाल को। जाने जु विहाल भए वल्लभ रसिक लाल कंप हाल वाल हूँ जनायो निज हाल को ॥ सटि वाट ही में साल वीज श्याम साल दई ओढि चली बाल मन ओढ़ि चली लाल कौ ॥१२॥ आई सुघराई ही सों गाई सुघराई ही सों तान सुघराई हीं सों हरी सुघराई हैं ॥ मदन छकाई की छकाई चखि फेरि जु

छकाई पिय मति सुन फिरि ऊछकाई है। वल्लभ रसिक की बनाय विधि ले बनाई किही विधि ले बनाई यामें जु बनाई है॥ निकाई निकाई केती तियनि की निकाईनि मांझ तें निकाई यह प्यारी की निकाई है ॥१३॥ नेंकु देखि पाई इतराई इतराई पुनि नेंकु देखि पाइ न धरनि दीजियत है। सब वसुधाकें सुरलोक नही झाँके सब सुधाकें जनम तुस्स बेंन पीजियत हैं॥ सदा नवरूप तेरै सदा नव रंग दान दान बस रूप सें विरह मीजियत हैं। वल्लभ रसिक सुख मानियों निमिष में मनिष सुषमानि अनिमिष की जियत हैं ॥१४॥ फूली है वंसत ऋतु आए ही सरस रस पाए ही उमंगी अली नेंननि जियरीसीं। ठाढीं चहूँ ओर वाढ़ी दल वल साजे नव जोवन पवन के परस लहकारीसीं। हियें वस्यो श्याम चोलो तिलक चिलक मिसु उझक्यो सो याते श्याम उर निरधारीसीं। वल्लभ रसिक भरीं लाललै गुलाल भई लाल रंग वाला गुल लाला की कियारींसी ॥१५॥ होरी खेलि आवति हैं छैल सरसावति हैं अंग दरसावति वढ़ावति हैं हाल कों। नैननि नचावति हैं धूमहि मचावति है डफहि बजावति उठावति गुलाल कों॥ कुंकुम हिलावति है चलि चलि धावति हैं मुख लपटावति झुलावति है माल कों। वल्लभ रसिक रंग मेह वरसावति हैं गावति रिझावति है लाल नव बालकों ॥१६॥ लाल रंग पाइन हूँ लाल रंगि रंगि पाइ पाइ लाल हाथ परसत सरसात है। लाल रंग दशन दरसन सों लाल करें लाल रंगि रंगि करें

हँसनि की बात हैं। वल्लभ रसिक दोऊ तन मन लाल रंग बसन गुलाल लाल लाल भए जात हैं ॥ १७ ॥ झुलत कदंब झूलें रसिक कदम्ब मणि अम्बर तरुनि फूल झूलिकें गहत हैं। झूलें लाल अम्बर अंतर अरु अंबर सों लपटें लपटि संबरारि उलहत हैं ॥ झूलति अडंबर सों अंबर मलार तान फूलत मयूर नांचि नांचि उमहत हैं। वल्लभ-रसिक नेह मेह मन बन मांझि निशि दिन भोंर साँझ घुमड़ रहत हैं ॥ १८ ॥ कुञ्ज की महीपति किशोरी पति संग मिलि दीपनि की दीपतिसों मानी जु दीवारी हैं। दीपनि की दीपति हूँ दीप दीप दीपतिन दीपतिके पारहूँ अपार दुति धारी हैं॥ वल्लभ-रसिक सरसुती पति सतीपति सचीपति गीपति के चख चौंध पारी हैं। जा की एक दीपति सों दीपनि में दीपति सिरीपति बिकुण्ठ हू की लीपति उज्यारी हैं ॥ १६ ॥ बैठे नहीं सोहैं सु अमेंठे सुठि भोंहैं सुगरेंठें रिस रस गह्यो बैठत ही मान को। जुवा जानि जूवा रच्यौ पंद्रह में दूवा चालि गोरी सार ही सों बाँनि श्याम जुगदान को॥ हँसी गहि लेतें कूदि मान के किलेतें कर संग सुख लेतें जु खिलेतें मिलि जानकों। मैंन मतुलेकें पेन मतुलेके पाइ पिय नेह अतुले के सतुले कें देति पाँन कों॥ २० ॥ तन थिर मान धरे मन थिर ताँन माँत तान थिर मान जोरा कलँगी सों मान कों। कुरती इजारैं लेति कुल तीन्यों कुल तीके अधि करती सों लषों भर सुख मान कों॥ पल मांह राषों पल मांह राषों देखत न पल मान रहैं रहैं ओट पल मान कों। वल्लभ रसिक बलमासों

बल मान करों बल माँहि लषें भजे बलमान-मान कों ॥ २१ ॥
पागनि के पेचनि में भाग शिर पेचनि में लाग कटि पेचनि में वेलिबूटा लह्यो है। दुत हीं इजार दुत ही रु कुरती की वेलि-बूटा वासु बल्लभ रसिक अलो चह्यो है॥ वेलि-बूटा अतरौटा थिर मापै कुरती के रंग रस सेचन तरुण फल गह्यो है। आगे आनि देखि दोऊ बागें आनि बैठे सखि बागें बनि बैठे किधों बागें बनि रह्यो है॥ २२ ॥

❀ अथ सुरतोल्लास ❀

हुलसनि दुहूँ ओर हुलसानी। सो हुलसनि मो जिय हूँ जानी ॥
उनते अधिक उमग है याकी। देखें अँखियाँ खुलें हिया की ॥
इन अँखियनि की बेई अखियाँ। ये बैं मिलि मैं एकै लखियाँ ॥
दो०—अब इन हीं सो निरखि कैं, कहूँ सुरति उल्लास।
इनसों बिन -निरषे कहौं, कोऊ रस आभास ॥ ४ ॥
चौ०—नवल निकुंज महल रस पागे। बैठे दोऊ परम सभागे ॥
उछरत छलकि छलकि अनुराग। बल्लभ रसिक सहचरी भाग ॥
सहज हीं अंग अनंग रँगे सब। उमगनि प्रीतम पाइ छुटे कब ॥
लहलहानि हुलसानि गात में। मिसहीं मिसु उर परस बात में ॥
रीझ परस्पर ताल देत कर। उमग कपट लपटन कों अवसर ॥
छं०—मोहनि की एंढनि सों ऐंठत सोहन सों इठलाति।
मोहनि सों मोहति है पिय मन मुसकनि सों मुसक्याति ॥ १० ॥
निरखत हिय उमग्यो ही आवै। उझकि उझकि झलकनि रस प्यावै॥
प्रीतम मद प्यावत जब बालहि। चुंबन ही को करत रुमालहि ॥

दों०–श्याम हरी कुञ्जर फस्यो, लस्यो कुंचुकी जानि।
पठयो पिय काढ़न धर्‌यो गस्यो फसनि में पानि॥ १३॥
दो०–रोम रोम पुलकित चकित थकित नैंन सुख भार।
निरखि निरखि लालन बदन करत हिये कौ हार॥ १४॥
रति रस केलि दुहूँ मिलि बाढ़ी। रस चसकनि में ससकनि गाढ़ी॥
मन मन हुलसनि सुलसनि सोहैं। विहसनि चौंप चौगुनी भोंहैं॥
लालचु ललचि वसो पिय माँही। रीझि रीझि क्योंहूँ न अघाँही॥
उनमद जोवन मद मतवारे। हँसि हँसि हँसत हँसे नहीं हारे॥
लटकि लटकि लपटति अंकनि में। मचकति लचकति दुहु लंकनिमें
दो०–रहे रहनि कों राखिकै आनंद की मह चोट।
बिवस विवसता ह्वै गई लई सुखनि की पोट॥२०॥
मद छाके थाके मिसुनि अति आनंद की दानि।
उठी सुभट रति समर में, तजि नव तन की कानि॥२१॥
चौ०–रति विपरीति सुरीति सुहाई। रसना हरसि कहत लुभ्याई॥
छैलछकी छर हरी छबीली। लफि २ लह लहात अरबीली॥२३॥
सहज मुरनि विथुरनि अलकनि की। शोभा खेद विंदु झलकनकी
गोल कपोल तँबोल झलक छबि। नथ मोतिनकी ज्योति रही फबि
दो०–रति प्यारी प्यारी कहर करति सुरति विपरीति॥
रति पति की मूरति भई लई दुहुनि मन प्रीति।
मतवारी हारी नहीं प्यारी रति विपरीति॥
झुकि उरसों उर लाइ कें लेति अधर रस मीति॥२७॥

❀ इति श्री सुरतोल्लास सम्पूर्ण ❀

।। अथ वल्लभ रसिक कृत पद नित्य गान को ।।

राग विभास

ललचि लपटानें हों लाल भोर भयोहूँ जानें।
सुनत विभासललित तानें पैनिपट रस लंपट फिर फिर फिरिपटकों-
तानें। झीनें नील पट में अंग झलकनि लीनें भूषन यौं उपमानें।
सागर अंक मयंक मीन कच्छप मणि लक्ष्मी दरशानें ।। २ ।।
छूटी लट सटकीरी एक ताटंक छूटि परजंक मिलाने।
रीझि समर रस विवस समर करतें खसि परी असि फरी अनुमाने
मदन मोहन तिय वदन निहारि वारि चटकावत अंगुलि जाने।
वल्लभ रसिक रसीली कें रस लै रसमसे नैंन अधर मुसक्याने ।।

राग पंचम

अंखियाँ सों हैं अलसोहीं दोऊ जगि लगि बैठे सेज।
खुली अलक बिच पलक अध खुलीं घुलीं हैं निसि के रस इक
टक रहति हैं सोंहीं ।। बेंदी टेढ़ी रतन टेड़ी ढिग अध अंजन
लीक पीक लसों हीं। बल्लभ रसिक सखी चतुर चतुर दोऊ
रिझए मधि सधि राखि आरसी सोंहीं ।। १ ।।

मोर मरोरति मुसकति आगें चली पिया के।
लालच लागे लाल लगे पाछेहि तिया के ।।
गोरी गोरी पीठि नैंन भोरे रसिया के।
गडि गडि बैठे बंद करत बंद बंद हिया के ।।
दुहूँ गाँठिन तर छुटे बंद द्वै द्वै डुरिया के।
चलि चलि नैंना चलत हलत चारौं फुँदिया के ।। ३ ।।

बद्धी अंसनि उतरि जोर द्वै द्वै लरिया के ॥
लखि भुज तरह्वै झूलत झूमक बर मुतिया कें ॥
यद्यपि बेंणी डसति त्रसति नहीं नेंक जिया के ।
निरखत उतरत जोर जहर मुहरा अंगिया के ॥ ५ ॥
कटि लचकति कटि लचकत सु भरनिगर छतिया के ।
रहत आसरें श्याम सफा नेफा तकिया के ॥ ६ ॥
बरनितंव पर लहँगा लहकत चलत तिया के ।
सघन जघन झांई विच नैन रहै गसिया के ॥ ७ ॥
टोरा मधुर मधुर धुनि जोरा गूजरिया के ।
सरसत उघरत सुघर लखत कछु पीडुंरिया के ॥ ८ ॥
मुंज मुंजजीं एडी आवति नहीं विच बतिया के ।
आवत पते मिलावत यौं जनमकी पतियाके ॥ ६ ॥
लटकत छूटे छोर छवीली ओढनियाँके ।
सुवरण बूँटे जोर खुले रँग बैजनियाँके ॥
मधुप निवारत लाल रुमालहि लहि छहियाँके ।
चितई मुरि ढुरि आइ बीच लाने वहियाके ॥ ११ ॥
जिन अंग अंग सों खचे धन्य कुरता जरिया के ।
वल्लभ रसिक सहचरी वलि वलिया विरियाँ के ॥ १२ ॥

राग विलावल

मन मोहन मन मन मोहन तातौ रतन रकेवी मोहनभोग ।
हेम थार पूरी पूरीं मोमन पूरी झलकहिं वन्यौ जोग ॥
पेच सवाद परो ही पिय को पै याको सबाद इहीं छिनु जानि ॥

रचत है पाग पेच प्यारी शिर पेच लै दियो अलि पानि ॥ २ ॥
तातो नेह चुचातो कौर रसिक शिर मोर अधर धर्‌यो तियकें।
हंसि मुस क्याइ रिझाइ आइ कर कमल झुलाइ धरति मुख पिय कें।।
मधुर अधर रस लेत देत दोऊ मीनकेत बस हेत न थोर।
बल्लभ रसिक मिंहँदी कर रंगु कढ्यो चढ्यो अधर वर रंग सुजोर।।

राग देवगिरी

आवति बाल लाल रंग भीनो।
गावति चुटकिन ताल लगावति हियहिलगावति लचकति अति कटि खीनी ॥ देवगिरी कीताननि की लचि लचकावनि पिय प्राननि लचकनि लीनी। वल्लभ रसिक विचार विसारि विहारनि पै तन वारि हारि लिखि दीनी ॥ १ ॥

राग धनासिरी

प्यारी तोहि देखत नैन शिरात। छैल छवीली हो, रसिक रसीली हो, रूप गहगही हो, प्रेम वहवही हो, नित्य किशोरी हो, चतुर अरु भोरी हो, रसनि डहडही हो, लला लहलही हो, अति सुकुवारी हो, संग विहारी हो, गरब गहेली हो, संग सहेली हो, अति सुख धामाहो, पिय अभि-रामाहो, अंग सलोनीहो, मद गज गौनी हो, खंजन नयनीहो, मदपिक बैनीं हो, नवल नेहनीहो, कुंज गेहिनीहो, रसिक नागरीहो, गुण उजागरीहो, जिय की ज्यारीहो, जाननि यारीहो, अति अलवेलीहो, रति रस झेली हो।
सुंदर वदन बिलोकत अनिमिष प्रीतम नहिन अघात ॥१॥

सुभग सजल मुक्तन की वँदियाँ दुहूँ ओर बेंना के।
पर सुहाग राज सिंहासन बैठ्यो मधि सैंना के ॥२॥
घूघर बारनि विच विच विच बारी सुवरन कान।
मिथुन वरन आभरन मिलनि लषि लालन लगत सिहान ॥३॥
जगमग जगमग करन फूल तर झूमक झमकनि केत।
निरषि लगोंहीं डीठि रसिक की चलि आपुनु पै लेत ॥४॥
वेणी मेंनी कें जु गुही जुही सुही हरि लेत।
लरी खरी सुथरी मुक्तन की माला विच छबि देत ॥५॥
श्याम सुर्प पेंनी मन वेध्यो घाइल घूमत पीय।
हँसि हँसि अब लोकनि जोवनि बूटी ज्यावत जीवन जीय ॥६॥
अंखियाँ गरत्र भरी मद छाकी थाकी रस के भार।
भोंहैं सहजहँ सोंही सोंहैं शोभा को सिंगार ॥७॥
सरस सुढार बीच दे लालहिं नथ के मोती सोंहैं।
विधे रंगीले अति छवि छाजैं चढ़े विराजै योंहैं ॥८॥
अधरन की अरुनाई कों लखि लाल लाल ह्वै जात।
चारु चिवुक विच श्याम विंदु लखि श्याम सुरूप सुहात ॥९॥
श्याम दशन चौंपनि की चमकनि हँसनि सनेह सनी में।
ललन सिहाइ सिहाइ लाल दृग धरत न धीरज हीमें ॥१०॥
तिल विलसन गोरे कपोल पर बुधि सुधि तजि हुलसी।
हुलसि हुलसि ललचाइसि मिटि या तिल पर आइ वसी ॥११॥
प्रीतम पान खवाबत अंगुरी अधरनि छ्वै छकि जात।
भरी भरी अखियनि सों पिय तनु चितैं चितै मुसिक्यात ॥१२॥

चढ्यौ ही रहतु तब रूप अमलचित समुझत सांझ न भोर।
झुलबँहि मौज मजेज सहचरीं वल्लभ रसिक हिंडोर ॥१३॥

राग धनासिरी ॥

लाल तोहि देखत नैन सिरात। छैल छवीले हो, रसिक रसीले हो, रूप गहगहे हो, प्रेम वहवहे हो, रसनि डह डहे हो, हंसनि लह लहे हो, अति अलबेले हो, पंकज नैना हो, मंजुल सेना हो, अंतर गोरे हो, चतुर मणि भोरे हो, साँवल सुंदर हो, रसिक पुरंदर हो, अंग त्रिभंगी हो, नव रति रंगीहो, अनंग तरंगीहो, नव तियसंगीहो, सुखकी सींवाहो, लखि लखि जीवाहो, योवन मातेहो, अति इतरातेहो, रूप उजागरहो, सब गुण सागरहो, प्राण पियारे हो, नैनन तारेहो, अनूप सलोंनेहो, रूप इकोंनेहो, मन्मथ मोहनहो, अंग अंग सोहन हो, मद गज चालीहों, वरवन मालीहो, प्रीति झक झोलेहो, महामिठ बोलेहो। मदन मोहन शुख सदन सुवन तन ये निरखत छिन न अघात ॥ १ ॥

वनक वनी कमनीय पाग तनु गगन गुणन बढ़ाई।
फवी बहूँत पेचनि ऐंचनि सों तिय सम शिरहि चढ़ाई ॥ २ ॥
फेरनि फिर पगिया लगिया सों जगमग बैठी ठीक।
अब शिर पेंच लगायति नैननि देत बेलि अरु लीक ॥ ३ ॥
मोर पंख करडुलै डुले पुतरी लों वरजै।
ह्यांरूप कहर डरियाउ आउ जिन नाउ धरम की लरजै ॥ ४ ॥

छोरे घर घालन कों हालत घूघर बाले केश ।
गज मोतिन की ढलकनि झलकनि अलकनि बीच सुदेश ॥ ५ ॥
कुंतल कुटिल छलनि अभिराम श्यामघन नेही जानि ।
ग्रीव लगें काननि सों लगि आनन सों लागत आनि ॥ ६ ॥
केश पास ए फिरत वदन कें आस पास आराधैं ।
आवत देश पास इहि डीठि सुदेस पास सों बाँधैं ॥ ७ ॥
नैन मैंन मत बारे नैननि नेंकु निहारें भोलैं ।
डोरनि बाँधें मेरे नैन सुडोरे डोरे डोले ॥ ८ ॥
नैंन पूतरी श्याम लाल डोरनि सों बँधी निहारैं ।
पैठि तरुनि के अंतर बाढ़ी बहु जर जरनिउ रवारैं ॥ ९ ॥
बनी बुलाक अनी नासा की मुक्ता हालनि भावैं ।
छिनु छिनु छवि की छुटैं उलाक सुलाक कियें मन ल्यावैं ॥१०॥
अमल अमोल हंसनि दशननि बिच बनी वेंजनी रेखैं ।
इहिं अमलनि अमली होइ गई कमलीं तेई अंखियाँ देखें ॥११॥
नीमा मिहीं रोम रोमनि की छविणी मान दबावैं ।
चढ़ी चुरीनि चुनावट चींननि बढ़ी छविनि दरसावै ॥ १२ ॥
बलकति झलकि इजार सुहाये गहिगहि पाइनि चुरी जु धरई ।
निरषत छोर इजार बंद के झलकत कलकत परई ॥ १३ ॥
कलकंठी के बीच उरबसी तल मुक्ताहल भूलैं ।
राषत भूलै भूलै मनकों तनकों धनकों सब भूलैं ॥ १४ ॥
मुक्तन की बढ़ी लषि वढ्ढी सक्तन की मति सार ।
मुक्तनिके थाकनि सों हालत शुकतनु मणिके हार ॥ १५ ॥

बाजू कौ ताइत जाइत में बंद करत झलकैंसें ।
पहुँची तापहूँ चनि पकरैंसीं घर पहुँचैं तिय कैसें ॥ १६ ॥
सुवरण करा कराइ धरैं करकर मुहरा सिंह बनाइ ।
यातें गज गामिनि कुच कुंभनि पंजनि परनि सुभाइ ॥ १७ ॥
सुंदर लाल के कर पूर रही कर पूर सुमिरनी ।
कर पूरन सुमरन वहाइ करि पूरन खोवति फिरनी ॥१८॥
बैठि सु पाट बाट पारतु है मूंगा कर दच्छिन में ।
वेधि बांधि कर गह्यो लाल पैठतु लच्छिनु अच्छिनु में ॥१९॥
सुघटित जटित छला मुदरिन के हीरनि अति दुति कीनी ।
छिगुनी के छोंरनि में छैल छवीली मिहँदी दीनी ॥२०॥
पंकज अरुण चरण आभरण धरत धरनि पर बाजैं ।
जोरा हरित ललित पग छवि नग जोरा हरित विराजैं ॥२१॥
जोरावर युवतिन कौ हरयो सु पाइ परयो ह्व आइ ।
चटकनि मटक अदाँ इनि कों पाइनि कों देत सिखाइ ॥
छवि लखि छकी छबीली के संग छकीं छबीली सखियाँ ।
सुबरण सुवरन कलकसनि आगे करि सीवत अखियाँ ॥२३॥
लोंनी तिय तन चितै चितै मुसक्याबै छरी फिरावैं ॥
घरी घरी सुछरीकें पंजहि नैन कंज सों लावैं ॥२४॥
धारैं हार हिलै जनेउवा जिय में धारैं गोभैं ।
श्याम साम सुर कहि कल्यान दच्छिन करधनकों लोभैं ॥२५॥
अंक भरण आतुर चातुर तिय नियरें आवनि कीनी ।
केसर की बैंदी में दीनी मृगमद बेंदी भीनीं ॥ २६ ॥

प्यारी छिगुनी पर वलदे अलकनि के छलहि सुधारैं।
बदन इंदु पर खेद बिंदु लषि लाल रूमालहि ढारैं ॥ २७॥
इहि रस छके सके न सँभारि विकाइ थके मेरे नैंना।
बल्लभ रसिक सखी नैननि सुख बैंनन कहत बनैंना ॥ १८ ॥

राग धनाश्री

ये नैंन तुरंग अलोलन ऐंन। प्यारी के बदन सदनमें श्याम
सरोबर तन ले निकस्यो जल प्यावन कों मैंन ॥ १ ॥
घूँघट लिये हिये नाचत निकरत रस के चाइ।
भोंह सैन शिर पर कलंगी सी हालत फिर फिर आइ ॥२॥
अरुनी की वरुनी कारी किस बारन केसे छोर।
झलकत अंग असित सित सोई अबलक रंगनि जोर ॥३॥
पलक झपक सीई षूँदनि इँहि भाइ पाइ कजु देत।
तृषित भयेसु मनो सरबर कों इतहि वुलायें लेत ॥४॥
पहुँचे उज्वल रस कौं झेलत खेलत मानें चैन।
बल्लभ रसिक सरोवरतें अब काढैं हू निकसैं न ॥५॥

राग नट

प्यारी रूप भूप पिय ऊपर निपट अनीति चलावैं।
कहत कह्यो नहिं जाय हाय यह देखत हीं वनि आवै ॥१॥
बेधत नैननि सैन लिये तारेन बीच रखावै।
मुसकनि बाँधत चौंपनि मारत लट सूँ लै लटकावैं ॥२॥
हिये चढ्यो ऐंठे तन तन लै ठोडी गाड़ गढ़ावै।
भोंहनि मोरि मरोरि कँपावै सन्मुख रसनि डुबावै ॥३॥

तिलसु कहा तासों तिल तिल में तिल तिल दिलहि करावैं।
सोंपै निरदय मनमथनि उच कुच गिरहि चढ़ावैं ॥ ४ ॥
बूझति हूँ हो तोसों आली यह वैरकि प्रीति कहावै।
बल्लभ रसिक सखी कौतुक पिय याही लषि सुखपावै ॥ ५ ॥

राग नट

बनि बैठ्यो फेंटा केसरी री मदन मोहन धरी कलंगी सीसरी।
छैल छबीली भाँतिनि ढारै घूँघर बाले केशरी ॥
तमहिं मरोरि ढोरि नैननि गावत निकस्यो री केसरी।
वल्लभ रसिक मान गज भाजत राजत कटि जिमि केसरी ॥ १ ॥

रा० गोरी

ठाढी गहैं कुंज की डारी। झूमति लटकतसी प्यारी ॥
लटकत गोरी बाँह साँह मषतूलन के फोंदारी।
अटकी तियकी लटसों हिलि मिलि पिय निज कलंगी ढारी
लटकत भाल बादले छोर उलट उपरैनी डारी ॥ २ ॥
लटकि लटू है लाल अधर बर बीरी देत सँवारी।
लटकि अधर ही देति बहे रस मानत सुकृत विहारी ॥ ३ ॥
लटकनि में इतराइ पाइ इक उलटति कछु छबि न्यारी।
लटकि लटकि वातन पर बल्लभ रसिक अली बलि हारी ॥ ४ ॥

राग हमीर

अटकी मूरति नागर नट की। एरी यह मेरे मन।
मैंन सैंन नैंननि हँसि मटकनि लटकनि मोर मुकुटकी ॥

कुंतल कुंडल चिलक तिलक केसरि वेसरि ढरि लटकी।
अंग अंग आभरन हरनि मन मनमथ गति उद भटकी ॥ २ ॥
चटक चटक पग धरनि धरनि पर छुट चठंकीले पटकी।
पान भरे आनन तानत लै तिय मति गति अति हट की ॥ ३ ॥
तितहीं चख चलि जुरत जितै हित चित वनि चितमें खटकी।
लषि लष आनँद चोट सहित मति बल्लभ रसिक सुभट की ॥४॥

राग ह०र० हमीर

मंजुल कल कुंजतल बिमल मंडल धवल नवल रस रास विरचित किशोरी। ललित ललितादि सखि रचित कर परप्सर मंडलित चलित अति गति न थोरी ॥ १ ॥ प्राण समतूल अनुकूल प्रिय अंस भूज मूल धृत मध्य मंडल सुगोरी। त्रिविधि सुर ग्राम अभिराम गुण धाम वल श्याम आलापयति सुमति भोरी ॥ २ ॥ सखी सुरसाल सुरसाल वादित मृदंग वीण रस भीन वर ग्रीव डोरी। गीत-संगीत कृत रीति गति जीति गृह लेति सुख देति तानिनि झकोरी ॥ ३ ॥ नृत्य-गति रंग अंग अंग मटकाइ कल अलक लटकाइ कृत चित्त चोरी। खेद कृत खेद कण भेद प्रीतम करत भाव भरि भेद भृकुटी मरोरी ॥ ४ ॥ थेई तथेई थेई उघट सुघट मुख सुषम सुख गंध मद अंध अलि बंध कोरी। तान बंधान संधान सुर ज्ञान युवराज गजराज आलान डोरी ॥ ५ ॥ नीवि रसना हँसन कुंचुकी कर वसन अधर सरसानि आनंद वोरी। निरखि बल्लभ रसिक सहचरी हिय हरसि मानि निज भाग मद मत्त जोरी ॥ ६ ॥

रा० स० न० ईमन

फव्यी ऊदी दोऊ फेंटा गोरे भाल पर बेंदी लाल । सौने सूत कलंगी के नीके झुके दाहिनें अलक श्याम पर करहिलाल । सुवन बनी नथ फेरति फिर फिर पान खाति इतराति बाल ॥ दरपण लखि रिझबार रीझि लजि उठंगी पियासों भुज भरी बल्लभ रसिक लाल ॥ १ ॥

रा० ई० न० ईमन

नीमा तन सुख को पुभि बन्यो है सोंधे सनि सुवन अंग । कंठी बनि बैठी कटाउ की उमग भरे अंग की झलकनि पलकनि ही उठत अंनग रंग । अंसहि झेलि हमेल रतन की छ्वै नितंब रही छवि अभंग । चुरीं घुरीं सुथरीं धारनि की दाँवनि मधि झम । कनि सखि बल्लभ रसिक चख फिरति संग ॥ २ ॥ इन लिये कर छरी छबीली मिहंदी दिये सुरंग रंग । जोबन अति इतरानि पढ़ाई सुकरनि चुरीं जुढुरी ले चढाँई सोहें मोतिनि छर पहुँचीनि संग ॥ पाइनि पाई पाइ जेब जेब दई जोरा हरित सुरंग ढंग । बल्लभ रसिक करन पर कर धरि लेइ अनूठी तान ठमकि ठमकि चलि सुधंग ~~संग~~ ॥ ३ ॥

ईमन

दोऊ मदमाते लगनि लगे रँग मगे गात । वहसि बहसि अधरासव प्यावत विहँसि बिहँसि अंगनि अरुझावति रहसि रहसि लपटात जात । प्रीतम सुकृत वेलि फूली झूली जु तरुनि

चढ़ि सुरति सुरति अरतन अघात। यह सुख निरखत हरषत परखत वल्लभ रसिक सखि नैन सिरात ॥ ४ ॥

राग कान्हरा

श्याम सखी गोरी की गुहति वेंनीहि चाड़सों। जानु जुगल मधि सधि वैठी पै अनंग चुगल अंगनि चोंकी सो भोंहैं ऐंठि अनखाति लाडसों ॥ १ ॥ अति अनुपम कोमल कपोल लगि विरमि विरमि कर रहत खादु जाड़सों ॥ छुवत हीं भुज मूलनि फूलनि अति विहँसति त्यों त्यों जिय जिमि बैठति मैंन माँड़सों ॥ २ ॥ राषी ऐंठि उरोजनि ऊपर पीठि मीडि नीठि हिय ग्रीवा ह्वै कर निकसत नहिं चिबुक गाडसों। दरपण लखि रिझवारि रीझ देत मन मानो रस सानी जानी वल्लभ रसिक सषी लषहि प्रेम आड़ सों ॥ ३ ॥

राग कान्हरा

छैल छवीली वल गुही बेंणी अति ठाढी। सोहै सुठि भोंहे तनी अँखियाँ मद छाकी सुवन कंचुकी गाढ़ी ॥ झीनी ओढ़नी को अंचल शिर छवि भरे अंग साँचे भरि काढी ॥ वल्लभ रसिक रीझि पाँइ परे हँसि अँक भरे प्यारी तब रस सलिता बाढ़ी ॥२॥

राग विहागरो

महल मदन माती अली ये औरहि कहा मानें।
अलवेली के संग भईं अलबेलीं पहिरें बसन सहानें ॥ १ ॥
वेद भेद विनु नेम प्रेम विनु नेंकु न मन में आनें।
अछन अछन पग धरहिं कुंज मग मगज चढे असमानें ॥ २ ॥

अति सोहन मन मोहन हूँ सों बात ऐंठ की टानैं।
इनकी गति मति प्रीति नीति बल्लभ रसिकहि जानैं॥ ३॥

राग त्रिहागरा

लाल धरे थिर मनि छवि सोहैं ढिग कलंगी के। अंसनि झुलि बेलि बूँटे फूलनि खुली मनहु हेम फूल फूल्यो रूप द्रुम तासों फूलीं है बेलि नीकें। ऐसे हीं हेमवेलि दुतही पर कुरती के बूंटे फूलनि खुलीं मधुप नैंननि मधु पियो छवीली के। आधी तान रहित शतरंज वाजी आधी आधी वीरी कर बल्लभ रसिक सखी के॥ १॥

राग विहागरा

मंजुल मृदुल दूल दुलाई आजु मोमन भाई ललिता जू आनि उढ़ाई॥ सुवरण चित्र छटा चहुँ भू पर छवीली के छवीले कपोलनि ऊपर लगि जगि बेलि सुहाई। जगमगें लहँगा पै हम बूँटन की कुरती की बेलि ग्रीव हूँ चाँढरी उर ऊपर आई॥ ज्यों ज्यों उकसों हैं अंग जुग दरसों हैं त्यों त्यों बल्लभ रसिक लुभ्याई॥

राग विहागरा

वदन पर पाइयति री हिय की फूल। हार हमेलनि उर भावति पिय सुरझावनि दावनि चाबनि मिसु सरसत परसत उरज मूल॥ १॥ मुदुल दुलाई की बेलि सुधारत केलि सुधारत तन मन बारत भेलि कपोलनि करण फूल। पिय कर लगत जगत मनमथ तव हिय हिय हुलसनि सुलनि सोहति मोहति विहसति झरत फूल॥ २॥ वैननि में मैंननि की गरजनि

में चैननि की तरजनि नेह पगे आमूल चूल। वल्लभ रसिक सहचरी चख भरि पिये रूप मद घुरति दुरतिसीं ढुरत सुरन रस सानुकूल ॥ ३ ॥

राग शंकराभरण

नव उरज उतंग रंग मृग मदले नवल विचित्र चित्र रचत। ऐंन मैंन कंचुकी दुकीं सीं लिषि सवारीं षऐं षमकि सीं बैठारीं मुहरी बिच विच अति रंगु बाढत जब कर चलत। फैले रंगहिं गहि गहि पोंछत हारिन मानत फिरि फिरि गोंछत सँभरि सुधारत नेंकु उमचत ॥ वल्लभ रसिक अधबनि ये कंचुकी सों वनी बना पर रीझ बनी की अति गति रति रस मचत ॥ १ ॥

रा० केदार

अरी आजु रास मंडल अस चंद जुगल कलनृत्यत मिलि अलि उडगन। मुकुट की लटकतें पगन की पटकतें छुटि हैं छटामिसु किरण ॥ १ ॥ तान गान सुधा पोषि सुतनु रोमौषधि प्रफुलित कुमुद सुमन। ता थेई ता थेई थेई गिडि गिडि ताँ ताँ की झाँई सुहाई निमिसु उमगि गरज्यो रस निधिवन ॥ २ ॥ षोडस षोडस वैस कला सम नेह कलंकित देह संपूरण। कोक कला बहु संपति दंपति हस्तक छल सों बल सों निशि कृत कोक उरज जुग मिलन ॥ ३ ॥ प्रेम ही मय आमय अलि दृगनि कों दरसत नाँचत द्वै एकै तन। वल्लभ रसिक चकोर नैंन उहिं ओर अघाहु नये और कौतुक इक घात लाभ सुख करन ॥४॥

अथ बारह बट अठारह पैंडे

दोहा–श्री गुरु चरण प्रतापतें, गयो उरनि अँधियार।
कुंज घरनि विहरत लषों जुगल रूप घन सार ॥ १ ॥
रसिक अनन्यानन्य पिय जिय हिय की सुखदानि।
प्यारी रूप घटा उमगि वरषी वानी आनि ॥ २ ॥
चौ०–बल्लभ रसिक सहचरी बानी। जुगल लगन आसव सों सानी ॥
मद मत वारी अँखियन वाँचो। मदमत वारे की अँखियन वाँचौ
अधरम धरम धरम जहाँ अधरम एसी कछुक रसिकता आहि।
इन दोउन के मरमहि जानें तौ रसिक सरम को सकें निवाहि ॥५॥
दो०–धरम करम मणि में पुह्यो याके अधरम सूत।
मणि मणि मिलें सुमेरु सुख बल्लभ रसिक सपूत ॥ ६ ॥
चौ०–सुनहूँ सखी जे रसिक सयानी। जिनकी अँखियाँ रूप लुभानी ॥
रूप अयानी रूपें जानैं। यह अद्‌भुत को अद्‌भुत मानैं ॥८॥
जो अँखियनिके हाथ विकानी। तौ अँखियनको सुनों कहानी ॥९॥
जो अँखियन अखियां लषि पावैं। तौ ये अँखियाँ फेरि न पावैं ॥१०॥
जो लखि अँखियाँ फेरिन पावैं। तौ कहु अँखया फेर न पावै ॥
अँखियनकी गति अँखियाँ जानैं। अँखियनहीसों बातैंठानैं ॥१२॥
अँखियाँ बात कहन कों आवैं। तब रसनाके मदहि भुलावैं ॥१३॥
जुगल नेह की चुगल सदाहीं। करें नेह पें देही फँदाहीं ॥१४॥
आँखियनि कौ आंखयाँ ही भोग। अषियन को अँषियाँ ही योग ॥
अँषिया अँषियनिहीं को वाग। अँषियाँ अँषियनहीं को भाग ॥
देखत पैठे अंतर अँषियाँ। जियके जियहूँ ते ह्वै सषियाँ ॥१७॥

एसे जिय के अँषियाँ करैं। तब जियके जियहू कों हरै ॥१८॥
तब जिय अँषियनि देखे जीये। विनु पल देखें पल कें सीयैं ॥१९॥
देखि देखि देखें फिर देखैं। देखनि के अंतहि नहिं देखैं ॥२०॥
जो देखनि के अंतहि देखैं। तौ अंतर अंतहि अवरेखैं ॥२१॥
देखत अँषियाँ देखन भूलें। भूलहि देखन सों फिर भूले ॥२२॥
नेह भरी याही ते भूखी। निपट अघानी यातें भूखी ॥२३॥
निपठ सयानी याते भूली। बहुत मदी याते अति फूली ॥२४॥
फूलि फूलि यह सकुचत जाँहीं। फिर सकुचनि की फूलनि माँही ॥
फूलनि में जे सकुचनि जानैं। ते सकुचनि में फूलनि मानैं ॥२६॥
फूल सकुच को संवहि जानै। तब कछु रसिक आपुकों मानें ॥
जो कछु रसिक आपकों मानें। तौ कछु रसिक आपकों मानैं ॥
अंषियन की भागनि में लागनि। अँषियन की भागनि में लागनि ॥
भागनि में लागनि हैं बड़ी। वा लागनि में अँषियाँ खड़ी ॥३०॥
ऐसी जीतन हार निहारी। ऐसी जीति निहारनि हारी ॥३१॥

दो०—बचन श्रवन मन तन धनहि हारत नहीं सकाँहिं।
लगनि लगावहिं दाउ पर चावन हारत जाँहि ॥३२॥

चौ०-ये अँषियाँ आंषिनि की अँषियाँ। अँषियनि कोंलें मिलवैं अँषियाँ
तब अँषियाँ बोलैं अरु डोलैं। लेंहि देंहि सब करैं कलोलैं ॥३४
इनकी समुझन समुझ कहावै। सोसमुझन की समुझ भुलावै॥
रूप अटक इनसों आतिपरैं। रूप रूप के तन मन हरैं ॥३६॥
रूपसों शोभा नैननि रागी। तब शोभा की शोभा जागी ॥३७॥

दो०—शोभा प्यारी नैन पिय दोऊ करत कलोल।
रसिक सहचरी संग तें समुझि दुहुनि के बोल ॥३८॥
चौ०—ये पिय तन कबहूँ अलसों हीं। येपिय तन कबहूँ अलसोंही॥
ये पिय तन कबहू अलसों ही। ये पिय तन कबहू बरसों ही ॥४०॥
ये पिय तन कबहूँ सरसों हीं। ये पिय तन कबहूँ सरसों ही ॥
यह पिय तन कबहूँ तरसों हीं। ये पिय तन कबहूँ तरसों हीं ॥
चंचल इनकों सहज सुभावें। अँचल इनकों इन अति भावें।
इनतें कछुना नहि नैंछानी। इन छानी सो छानी छानी॥
इनकी जानी इनहूँ न जानीं। इनकी जानन जानी जानीं ॥४५॥
ज्यों ज्यों भावे त्यों त्यों खेलें। नैंनन को ग्रीवा भुज मेलें ॥४६॥
सुंदरता एक सुंदर नारी। सो नैनन सों अटकी न्यारी॥
करि मतवारी सबरस पीयें। जीवतहू इन विन नहिं जीयें॥
यासों मिलिये नैना नाचें। इन भरि काढ़े अपने साँचें ॥४९॥
जब अँषियनि सुंदरता आई। तब हीये सुंदरता भाई ॥५०॥
सुंदरता नैननि ले चली। अपने नैननि की ह्वै गली ॥५१॥
दो०—सुंददता के नैन की गली गए जब नैन।
अटकत अटकत से चले बोलि न आवै बैन ॥५२॥
चौ०—जब नैननि कों बैना भूलें। तब नैननि में नैना फूलें ॥५३॥
दो०—बेननि के नैनानिसों दरस्यो युगल सरूप।
नैननि के वैनानिसों बरन्यो बरन अनूप ॥५४॥
अंग अंग रँगनि भरे ये अँषियाँ शिर मौर।
रंग रंग के अंग की एइ परषैं ठौर ॥५५॥

चौ०—लोभ सने सब अंग पिया के। गोभ सने सब अंग तिया के॥
गोभ लोम सों अति ही सनी। लोभ लगन बाननि की अनी॥
फूल भूल दोऊ दोऊनि माँहीं। पावैं नही और यह छाहीं॥
फूल भूल दोउन की देखें। फूल भूल में भेद बिशेखें॥५६॥
फूलन की भूलनि में भूलनि। भूलनि की फूलनि में फूलनि॥६०॥
फूलनि की फूलनि में फूलनि। भूलनि को भूलनि में भूलनि॥
भूलत फूलत रहैं निरंतर। महा सुतंतर महा परतंतर॥६२॥
औरौ सुनि अँषियनि के काम। नेंकन ठाली आठों याम॥६३॥
सरस रसिक हिये करें षजानौं। ताते उमगे रस सब जानौं॥
कुल वा उरहिय कंठ वषानौं। सात ठौर में आइ झुलानौं॥६५॥
सात फुहारे छूटनि लागे। तिन में तीनि जुरे अनुरागे॥६६॥
एक अकेली बोलनि जानैं। बोलनि ही में सबरस मानैं॥६७॥
द्वै मिलि या बोलनि को सुनें। जुगल सुगंधहि द्वै मिलि चुनें॥
द्वै पुनि जुगल रूप रस पागे। इन सम कोऊ नाहि सुभागे।
ऐसें तीन युगल ह्वै छूटें। एक अनेक परम सुख लूटें॥७०॥
दो०—नैन फूहारे रूप के रूप रूप बँधि जाँहि।
इनकी छूटनि में बँधनि फिर नैननि की आँहि॥१॥
चौ०—छूटि बँधनि में बँधि २ छूटैं। बल्लभ रसिक नैन सुख लूटैं॥
जुगल फूहारे नल कों दैखैं। देखति मुसकनि फूल विसेखैं॥७३॥
दुहू रंग के दुऊ फुहारे। छूटत बँधे दरस रस प्यारे॥७४॥
दो०—बल्लभ दल फल फूल रँग अँग अँग फूलनि माँहि।
फल पायें फूलनि फलैं भूमि भूमि झुकराँहि॥७५॥

चौ०-अहर पहर रस षेलत बीतें। खेलनि में हारनि कों जीतें॥
रसिकनके चश्मो का चश्मा। उज्ज्वल रस का जिन पर वसमा॥
दो०-तिन नैनों के बीच ह्वै नैना देखत नैन।
वे नैना इनकों लषैं लषनि लषें ते चैन॥७८॥
चौ०-ऐसे नैननि कौ उद्यम सुनि। देख देख रसके रस कों चुनि॥
अटपटि बात कौन सों कहों। मन ही मन आनदहि सहों॥८०॥
नैंना बातन माते भए। तब तें रसिकनहूँ तें गए॥८१॥
बात कहन की मूरति ऐसी। बातौं यामें लगै अनैसी॥८२॥
नहि जानौ और सीक मेसी। ठाठी ठाढी फिरै नबैसी॥८३॥
नीरस यह घर कबहुँ न पैसीं। रसिकन ही में मानैं रैसी॥८४॥
बातें मूरति धारि जब आव। वल्लभ रसिक नैन को भाव॥८५॥
दो०-नैन लडैते जुगल सँग अति गाति ये लड़कोंहि।
रही समुझ समुझाय कें एक हूँ कहे मैं नाहि॥८६॥
चौ०-और सुना नैननि की बात। कहे बिना मोजिय अकुलात॥
अ०-ये अँषियाँ समुझनिपास बास के चहियै कि समुझनि ल्यावैं।
समुझनि कों भूलनिही समुझै तौ समुझ कहाँ त पावें॥८८॥
एसे समुझ गई सब भाँतिन भाँति बनी है आइ।
भाँति भाँत में आइ बनी है बनी बनी है भाइ॥८९॥
भाइ भरी जब समझन हारी सजी बिहारी नेह।
नेह चिकनई सुभग इक नई रपटे समुझनि देह॥९०॥
चौ०-देह धरे जब समझन आवें। आवनि वल्लभ रसिकहि भावैं॥
दो०-ऐसे समुझनि कवच सजि रूपी जुगल रसषेत।
नीरस समुझ बिधी नइनि घाइल समुझ समेत॥९२॥
चौ०-घाइल भई समुझ जहाँ घूमैं। तिनि अँषियनि में सूरे झूमैं॥
घूम झूम को षेल न छोड़ें। कुटिल कटाछ बान बहु ओडें॥९४॥
बाननि हीं सूँ घावन सीयैं। वल्लभ रसिक नैन यों जीयैं॥९५॥

दो०—विगरि परें जिनके नयन जुगल रूप के संग।
सैन बैन सुनतें रहैं चैन मैंन के रंग ॥ ६६ ॥
चौ०—ज्यौं ज्यौं नैन रूप वश भये। त्यौं त्यौं मन अंतर भिद गये॥
अब इन पायो मन को भेद। मनहूँ इन विन पावै षेद ॥६८॥
दोउन को मन एकै भयों। जाको पै ताको घर गयो ॥६६॥
इन घर गए न जे घर खोए। ते घर बल्लभ रसिकनि जोए॥
जानें तेई कुंज भवन हैं। छले जुगल रस सखि रवन है ॥१०१॥
जिनिके कहैं वर गए थे नैना। औघर आए जानौ बैंना ॥१०१॥
आठौं पहर रहैं मत वारे। लोक वेद इन सवै विसारे ॥१०३॥
दोउन की षेलनि में षेलें। दोउन की झेलनि रस झेल ॥१०४॥
दो०—यद्यपि दोउन की लगन सब मिलि कहैं समान।
पै प्यारी महबूब हैं आशिक प्यारो जानि ॥१०५॥
चौ०—मेरी मति यह करत ढिठाई। पै इतने में बहुत मिठाई॥
दो०—बल्लभ रसिक लही कहो सही करौ जो कोइ।
यारस यारस होइ तौ वा रस बारस होइ ॥१०७॥
छं०—जब लग अँषियाँ लषियाँ लषियाँ नाहीं राखो पकरि पकरि करि सब मेंड़ैं। जब अँषियनि अषियाँ लखियाँ तौ बारह बाट अठारह पैंड़े ॥
चौ०—पैरी करी एक सै आठ। बल्लभ रसिकन को जब पाठ॥
जो कोऊ जपै पढै पढ़ावै। जुगल रूप दरशन कों पावै॥

इति श्री बल्लभरसिक कृत वारह वाट अठारह पेंडे संपूर्णम्
श्री शुभमस्तु

— — —

केसरीसिंह यादव, कल्याण प्रिंटिंग प्रेस, राजामण्डी, आगरा।

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८
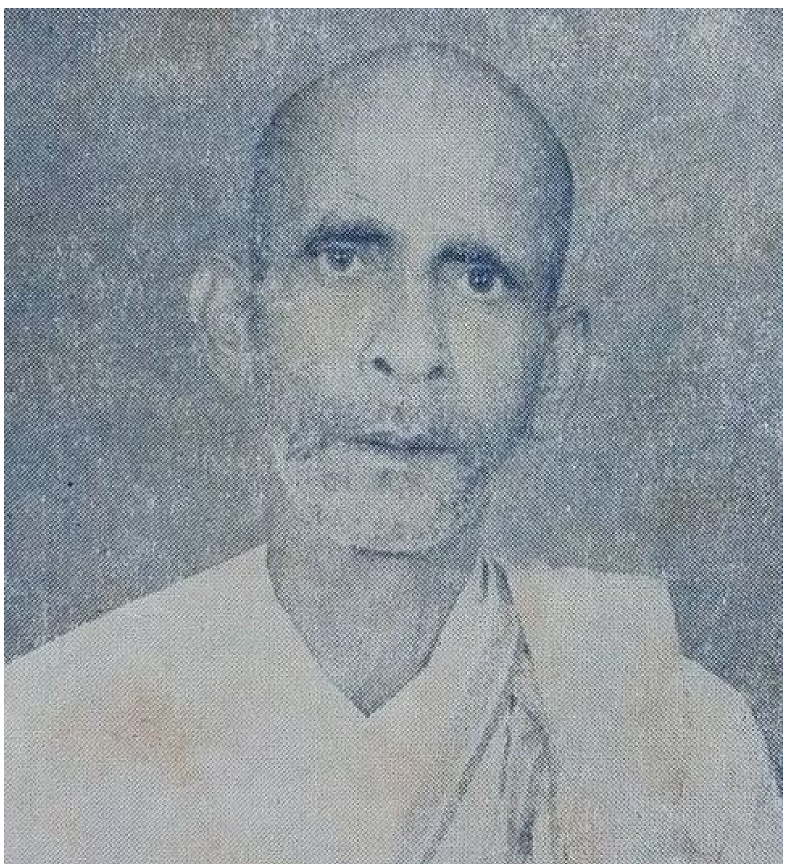
इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्